स्वतंत्रता संग्राम

विजय सिंह पथिक

डा० पद्मसिंह वर्मा

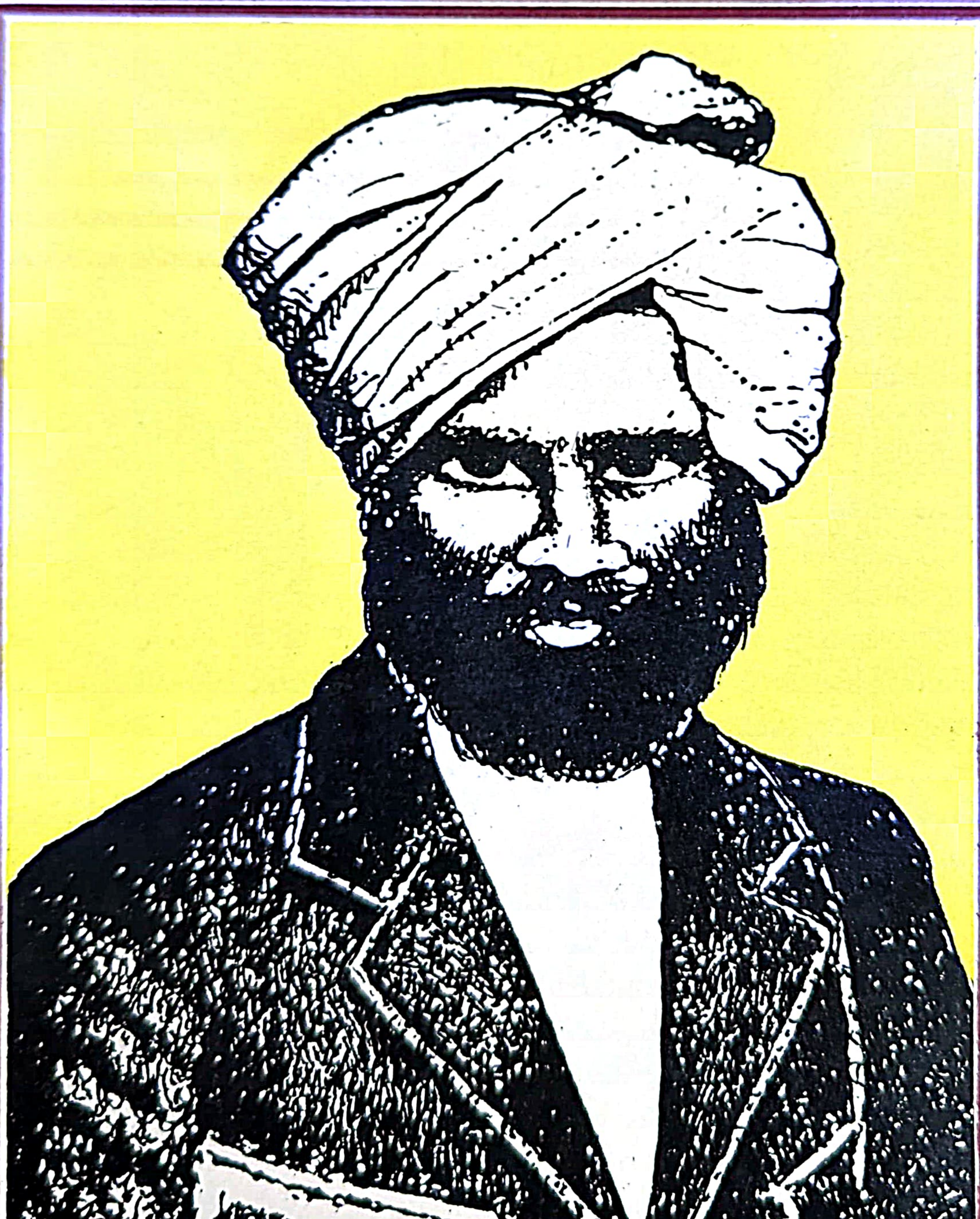

विजय सिंह पथिक

डा. पद्मसिंह वर्मा

प्रकाशन विभाग
सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

कार्तिक 1914 (अक्तूबर 1992)

© प्रकाशन विभाग

मूल्य : 8 रुपये

निदेशक, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली-110001 द्वारा प्रकाशित।

विक्रय केन्द्र • प्रकाशन विभाग

- सुपर बाजार (दूसरी मंजिल), कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, दूरभाष : 3313308
- कामर्स हाउस, करीमभाई रोड, बालार्ड पायर, बम्बई-400038, दूरभाष : 2610081
- 8, एस्प्लेनेड ईस्ट, कलकत्ता-700069, दूरभाष : 286696
- एल.एल.ए. आडीटोरियम, 736, अन्नासलै, मद्रास-600002, दूरभाष : 867643
- बिहार राज्य सहकारी बैंक बिल्डिंग, अशोक राजपथ, पटना-800004, दूरभाष : 653823
- निकट गवर्नमेंट प्रेस, प्रेस रोड, त्रिवेन्द्रम-695001, दूरभाष : 68650
- 10-बी, स्टेशन रोड, लखनऊ-226001, दूरभाष : 245785
- राज्य पुरातत्वीय संग्रहालय बिल्डिंग, पब्लिक गार्डन्स, हैदराबाद-500004, दूरभाष : 236393

बंगाल आफसैट वर्क्स, खजूर रोड, करौल बाग, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
दूरभाष : 7510455, 524200

प्रकाशकीय

प्रकाशन विभाग ने अनेक क्रांतिकारियों के जीवन और कृत्यों पर पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इनमें से कुछ पुस्तकें 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले शहीदों पर प्रकाशित की गई हैं और कुछ अन्य पुस्तकें भगत सिंह, चन्द्रशेखर आज़ाद सरीखे उन अमर बलिदानियों पर हैं जो अपनी गतिविधियां उस समय जारी रखे हुए थे जब महात्मा गांधी का सत्याग्रह आन्दोलन पूरे ज़ोरों पर था। तथापि कुछ क्रांतिकारी ऐसे भी हैं जिन पर बहुत कम लिखा और छपा है। विजय सिंह पथिक इसी श्रेणी के वीर सेनानियों में आते हैं।

पथिकजी ने शचीन्द्र नाथ सान्याल और खुदीराम बोस जैसे विख्यात क्रातंकारियों के साथ मिलकर काम किया। लेकिन वह केवल क्रांतिकारी ही रहे हों, ऐसी बात नहीं है। उन्हें राजस्थान में किसान आन्दोलन का प्रणेता कहा जा सकता है। वह एक निर्भीक पत्रकार भी थे। उन्होंने कई समाचार पत्रों का सम्पादन किया और उनके माध्यम से देशी रियासतों की प्रजा में स्वतंत्रता के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए अथक प्रयास किया। ऐसे बहुमुखी प्रतिभा के धनी व्यक्ति के जीवन और कृत्यों को लेखक ने इस पुस्तक में बड़ी सरल और सुबोध शैली में प्रस्तुत किया है। आशा है पुस्तक पाठकों को पसन्द आएगी।

डा. श्याम सिंह शशि
निदेशक

भूमिका

बारहवी सदी के बाद भारत मां पूरी तरह गुलामी की बेड़ियो मे जकड़ चुकी थी। विदेशियो के हाथो से भारत मां को दोबारा आजाद कराने वाले अधिकतर लोग जीवन बलिदान दे चुके थे। कुछ ने लालचवश विदेशियों का साथ देना शुरू कर दिया था तथा झूठे व खिदमतगार राजा, महाराजा, जमींदार आदि बन गये थे। सोलहवीं सदी के लगभग फिर भारत मां की कोख से कुछ सपूत पैदा हुए जिन्होंने देश में जागृति लाने की कोशिश की। इनमें से कुछ तो लड़े तथा बाकी ने अपने उपदेशो तथा सामाजिक विचारो के द्वारा दबे-कुचले समाज को जगाया। इनमे कबीरदास, रविदास, नामदेव, गुरु नानक, गुरु तेगबहादुर, गुरु गोविंद सिंह, महाराणा प्रताप, शिवाजी, अल्लाखां गुर्जर, स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद, राजा राम मोहन राय, स्वामी नारायण, महात्मा फुले आदि प्रमुख हैं। पर देश व्यापी कुछ न हो पाया। केवल मुगलों की जगह अंग्रेज शासक बन गए। अब भी गुलामी का चक्र चलता रहा। मुगलो और अंग्रेजी शासको में केवल इतना अंतर था कि जहां मुगल पूर्णतया भारतीय बन कर भारतवर्ष में राज करते रहे थे वही अंग्रेज विदेशी रहकर शासक बने रहे। अंग्रेजी शासको ने भारतीय सम्पदा को पूरी तरह लूट कर अपने देश में पहुंचाया तथा कुछ लालची तथा गद्दार जातियो, समूहो और व्यक्तियो को नौकरियो मे लगा कर उनका पश्चिमीकरण भी किया।

शायद उपरोक्त कारण ही था कि आज की विमुक्त जातियो, जनजातियों, अनुसूचित जातियो तथा पिछड़ी जातियों के पूर्वजों ने अधिकतर अठारहवी सदी के अंत मे गोरी सरकार के खिलाफ जगह-जगह आजादी के लिए खूनी लड़ाइयां लड़ी तथा सभी प्रकार का बलिदान दिया। पर

आजादी के लिए देशव्यापी न तो कोई संगठित लड़ाई लड़ी गयी और न लम्बा संघर्ष ही चला। अंग्रेजो को इन सभी छोटी-छोटी लड़ाइयों को दबाने मे कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई, क्योंकि अधिकतर भारतीय ही भारतीयो के खिलाफ लड़ते रहे। फिर भी इन लड़ाइयों में सबसे बड़ा लाभ यह हुआ कि आजादी की भूख देशवासियों में जागी और बढ़ती रही। इसके परिणामस्वरूप सन् 1857 की पहली देशव्यापी लड़ाई आजादी के लिए अंग्रेजी शासकों के खिलाफ लड़ी गयी। परन्तु इसमें विजय न मिली। इसमें हारने के दो मुख्य कारण थे। पहला देशव्यापी बड़ा संगठन का न होना तथा कुछ जातियों द्वारा अंग्रेजों का साथ दिया जाना। दूसरा देशवासियों में वैज्ञानिक ज्ञान की कमी तथा बहुत पुराने हथियारो का प्रयोग करना। क्योंकि अंग्रेजों ने आधुनिक हथियारों के बलबूते पर ही यह लड़ाई जीती थी।

सन् 1857 की लड़ाई में जो लाखों भारतीयों का खून भारत मां की आजादी के लिए बहा, उसने भारत मां के और लाखों सपूतों को जन्म दिया। यह कहना उचित होगा कि एक के बाद एक महान सपूत ने इन स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया। उनमें एक थे भूप सिंह बनाम विजय सिंह पथिक। मैं यहां इन महान आत्मा के बारे में कुछ शब्द लिखकर अपनी आत्मा को संतुष्टि प्रदान कर रहा हूं वहीं साथी मुधलिमये, स्व. साथी कर्पूरी ठाकुर तथा डा. एस.एस. शशि का भी बहुत आभारी हूं जिनसे प्रेरणा लेकर यह कार्य करने का साहस कर रहा हूं।

पाठकों से मेरा अनुरोध है कि वह इस महान सपूत विजय सिंह पथिक को इस छोटी-सी पुस्तक के माध्यम से समझें और यदि उनके बारे में उनकी ओर अधिक जानने की इच्छा है तो उन द्वारा रचित साहित्य को स्वयं पढ़ें।

डा. पद्मसिंह वर्मा

परिवार तथा बचपन

विजय सिंह पथिक का जन्म उत्तर प्रदेश के गांव गुठावली कलां, जिला बुलन्दशहर में हुआ था। यह गांव जी.टी. रोड पर स्थित कस्बा सिकन्दराबाद से खुर्जा जाने वाली सड़क के पास है और जी.टी. रोड से 12-13 कि.मी. की दूरी पर है। इस गांव मे अधिकांश गुर्जर जाति के लोग रहते हैं और पथिकजी भी राठौड़ (राठी) गांव के गुर्जर थे। उनका जन्म किस वर्ष मे हुआ था, उसका ठीक-ठीक पता नही है। कुछ लोग 24 मार्च 1882 बताते हैं जबकि कुछ लेखक उनका जन्म 28 फरवरी 1875 को हुआ मानते हैं। उनका जन्म दिन हर वर्ष विशेषकर राजस्थान में 28 फरवरी को मनाया जाता है।

विजय सिंह पथिक का बचपन का नाम भूपसिंह था। उनके बाबा का नाम इन्द्र सिंह राठौड़ था। वह क्रांतिकारी थे और 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजो के खिलाफ लड़े थे। उस समय वह मालागढ़ के नवाब वलीदाद खां की सेना के सेनापति थे। सेनापति इन्द्र सिंह के आठ पुत्र थे—नवल सिंह, महबूब सिंह, मजलिस, हम्मीर सिंह, दलपति सिंह, जहांगीर सिंह, गंगा सहाय और किसन सहाय।

हम्मीर सिंह के तीन बच्चे थे। सबसे बड़ी पुत्री थी, जिसका नाम मोहरकुंवारी था, दूसरे नम्बर पर पुत्र भूपसिंह (पुस्तक के नायक विजय सिंह पथिक) और तीसरे नंबर पर पुत्र नैनसिंह थे। आज भी पथिकजी के वंशज गांव में रहते हैं। उनके परिवारों में अभी तक भी त्याग, आत्मोत्सर्ग और बलिदान की भावना देखी जा सकती है।

पथिकजी का बचपन बहुत कष्ट में बीता। उनके पिताजी बचपन में ही चल बसे थे। अतः उनकी मां ने बहुत कष्ट उठाकर उन्हें पाला पोसा। उनका पूरा परिवार स्वतंत्रता-प्रेमी था और वह भी उस समय जब अधिकांश भारतीयो की अंग्रेजो के सामने यह हिम्मत नही होती

थी कि वे आजादी की वात सोच भी सकें। उन्होंने गुर्जर जाति में जन्म लिया था, जो 1857 से पहले ही अंग्रेजों की आंखों की किरकिरी वन चुकी थी। यह परिवार ही नहीं, बल्कि पूरा गांव, जाति तथा पास-पड़ोस अंग्रेजों के लिए हमेशा रहने वाला सिर दर्द बन गया था। अतः ऐसी परिस्थिति में भूपसिंह की शिक्षा नियमित रूप से स्कूल या कालेज में नहीं हो पाई थी।

8 फरवरी 1860 के माफीनामे* के बाद भी अंग्रेजों ने भूपसिंह के गांव गुठावली को बख्शा नहीं था। आए दिन गांव में पुलिस आती रहती थी और उनके परिवार पर विशेष रूप से पूरी नज़र रखी जाती थी। बाबा पुलिस से लड़ते हुए घायल हो गए थे और 1872 में उन्होंने सरकारी अस्पताल में आखिरी सांस लिया था। पिता हम्मीर सिंह का भी यही हाल हुआ था। एक दिन वह बीमार थे। पुलिस गोरे अफसरों के साथ गांव में आ गई। उस समय दिन के लगभग दस बजे थे। हम्मीर सिंह चौपाल पर पड़ी खाट पर लेटे हुए थे। पुलिस की टुकड़ी ने बीमार हम्मीर सिंह से कहा कि तुमने विद्रोह में भाग लिया है। अतः तुम्हें गिरफ्तार करके बुलंदशहर ले जाना है। पथिकजी की माता ने पुलिस वालों को समझाया कि ये बहुत बीमार हैं और घर के अन्य सभी आदमी खेतों में गए हुए हैं, अतः इन्हें अभी कुछ न कहा जाए। पर पुलिस ने एक नहीं सुनी बल्कि गोरे अफसर ने आदेश दिया कि

---

* फरवरी 1860 का माफीनामा वह माफीनामा है जो अंग्रेजों ने शांति के लिए महाराजा देवहंस धौलपुर, आगरा, भरतपुर तथा अन्य स्वतंत्रता प्रेमी बांकुरों के साथ विवश होकर किया था और कहा था कि अव हम आगे लड़ाई नहीं करेंगे तथा सबकी जब्त की गई जमीनें वापिस कर देंगे, सभी को जेलों से रिहा करेंगे, सभी मुकदमे वापिस लेंगे तथा सभी को उनके घर गांव और सभी अन्य चीजें वापिस कर देंगे।

इनकी पत्नी को भी पकड़ लिया जाए और बुलंदशहर जेल में ले जाया जाए। छोटे बच्चों ने पुलिस आतंक का शोर मचा दिया। अब भूपसिंह की माता कमला कुवांरी चौपाल से वापिस घर लौटी तथा लाठी हाथों मे संभालकर चौपाल वाली गली में तेजी से दौड़ी जहां पुलिस वाले उनके पति हम्मीर सिंह को पकड़कर ले जा रहे थे। इससे पहले कि पुलिस वाले कुछ समझ पाये कि क्या होने वाला है भूपसिहं की मां ने दो चार लाठियां उन पुलिस सिपाहियो के हाथो पर दनादन बरसा दी जो हम्मीर सिंह के हाथ पकड़े हुए थे। अब क्या था ? गांव की अन्य स्त्रियां भी लाठी लेकर दूसरे छोर से आ गईं। पुलिस वालो की जमकर पिटाई हुई। पुलिस वाले भाग गए। भूपसिंह के पिता पुलिस के चंगुल से छूटकर वापिस चौपाल पर आ गए।

गांव वालों ने गांव में कड़ा पहरा लगा दिया तथा रात दिन यही चर्चा होने लगी कि फरवरी 1860 का माफीनामा एक धोखा है। गांव के खुफिया प्रतिदिन यह बतलाते थे कि पुलिस ने अमुक-अमुक के वारंट जारी कर दिए हैं तथा पुलिस गांव पर शीघ्र धावा बोलने वाली है। हम्मीर सिंह घायल हो गए थे और भूपसिंह के जन्म के दो वर्ष बाद ही उनका देहांत हो गया।

भूपसिंह की मां कमला कुंवारी ने अपने बचपन में सन् 1857 के पहले स्वतंत्रता संग्राम को देखा था। उन्होंने ऐसे गुर्जर परिवार में जन्म लिया था जो 1857 से बहुत पहले से ही अंग्रेजो का दुश्मन हो चुका था। एक तो उनके पिता के परिवार का देश की आजादी के लिए कुर्बानी का इतिहास था, और दूसरे वह ऐसे परिवार में ब्याही गईं थीं जो स्वयं देश की स्वतंत्रता के लिए त्याग व बलिदान के लिए उस क्षेत्र में प्रसिद्ध था। अतः यह कहना उचित ही होगा कि देश की स्वतंत्रता के लिए त्याग की भावना भूपसिंह की मां को संस्कारों में मिली थी।

उनके बचपन मे ही मां कमला कुंवारी अपने जीवन में देखी त्याग की सच्ची घटनाएं उन्हें सुनाया करती थीं। जहां एक ओर ये घटनाएं देश की आजादी से संबंधित थी, वहीं स्वयं के बलिदानों से भी सम्बन्धित थी। इन्ही सभी कारणों से भूपसिंह के मन में बाल्यकाल से ही देश की स्वतंत्रता और उसकी दशा में सुधार की आग सुलगने लगी थी।

मां कमला कुंवारी उन्हें बतलाती थी कि "हमारे जिले बुलंदशहर (वरू) में, 1857 मे उत्तर प्रदेश को आजाद करने के लिए गांव वालो की भर्ती शुरू हो गई थी। अंग्रेज 1857 की लड़ाई को केवल सिपाही विद्रोह ही कहते थे और भारतीय उसे गदर के नाम से पुकारते थे। अत अंग्रेजों से लड़ने के लिए गदर सेना में भर्ती होने के लिए जिला बुलंदशहर में चहल-पहल व लोगों में जोश उत्पन्न हो गया। गदर सेना में अधिकतर गुर्जर थे और कुछ मुसलमान थे। एक इलाके रसाले के सेनापति तुम्हारे दादा इन्द्रसिंह राठौड़ थे। बुलंदशहर (वरू) जिले में भी अंग्रेजों से लड़ाई हुई तथा जिला बहुत समय तक अंग्रेजो के शासन से मुक्त रहा। सन् 1860 के आस-पास अंग्रेज जिले पर फिर कुछ नियंत्रण कर पाए। अंग्रेजी फौज गांव के गांव नष्ट कर रही थी। तोपो तथा गोलियो से हजारो लोगों को भून रहे थे। कुछ स्वार्थी देशवासी ही उनके मुखबिर बन गए थे जो अंग्रेजों को बतला रहे थे कि किन गांव वालों ने उनके विरुद्ध विद्रोह किया था। अंग्रेज अपने हितैषी ऐसे स्वार्थी लोगों को लाभ पहुंचा रहे थे। नए-नए जमींदार भी अंग्रेजों का साथ दे रहे थे। विद्रोह में जिन लोगों के शामिल होने का शक था उन लोगों को पेड़ों से बांधकर फांसी पर लटका दिया गया था। लोग डर कर गांव छोड़ कर भाग रहे थे। हमारे गांव वाले भी स्त्रियों तथा बच्चों के साथ रात को ही अंग्रेजों से बचकर आगे आगरा धौलपुर की ओर चले गये थे। वे जंगलों में छिपें रहते थे। हमारे गांव वालों ने निश्चय कर लिया था कि एक साथ ही लड़कर मरेंगे। हजारो नौजवानों

को अंग्रेजों ने अपंग बना दिया था। जंगलों के फलों पर ही उनका जीवन चल रहा था।

"हजारों स्त्रियां, बच्चे तथा पुरुष, अनूप शहर के जंगलों में छिपे हुए थे। मुखबिर की मुखबिरी पर अंग्रेजी सेना, पंजाब पुलिस तथा बंगाल सेना के सिपाही वहां आ गए। हमारे आदमी कुछ दूरी पर टोह लेने तथा हथियार चलाने का अभ्यास कर रहे थे। हम जवान लड़कियों ने कुल्हाड़ी तथा बंदूकें उन पर तान दी। विदेशी भाषा में फिरंगी कुछ कहकर हम पर टूट पड़े। लड़ाई जम कर हुई, हमारे पुरुष भी छिपे स्थानों से बाहर आ गए तथा अंग्रेजों की पूरी टुकड़ियों का सफाया कर दिया। उनके बहुत से हथियार हमारे हाथ आ गए। फिर डेरा उठाकर हम लोग वहां से चल दिए।"

श्रीमती कमला कुंवारी आगे बताती हैं कि "रात को हम सब चले जा रहे थे तभी हमारे आदमियों की मुठभेड़ अंग्रेजी सेना से हो गयी। गोलियों की आवाज साफ सुनाई दे रही थी क्योंकि अंग्रेजी सेना हम सब हजारों लोगों को घेर कर मारना चाहती थी। आखिर में हमारे आदमी लड़ाई जीते तथा बहुत-सी बन्दूकें, कपड़े आदि लूट कर लाए। फिर आगे चल दिए। आगे चलने वाली टोली खबर देती रहती थी।

"रात के दो बजे थे कि खबर मिली कि सावधानी के साथ चलो। एक तरफ जहां सर्दी थी, दूसरी तरफ वही अंधेरा था। हमने पूछा कि किसके गांव आ गए तो पता चला कि जाटों, ब्राह्मणों तथा राजपूतों का इलाका है। दो महीने पैदल चलकर तथा सभी मुसीबतो को सहते हुए धौलपुर में पहुंचे। धौलपुर में गुर्जर ही अधिक थे तथा एक रात को पूरे इलाके पर हम लोगों यानी देश की आजादी के प्रेमी लोगों का कब्जा हो गया। राजा आगरा भाग गया तथा बाकी सेना हमारी गदर सेना में मिल गई। नया राजा अपने देवहंस जी को बनाया गया। धौलपुर

राज्य के अधीन बहुत से इलाके आ गए और बहुत-सी पुरानी रियासतें हमारे राजा को सहायता देने लगी।

"अब सीधी टक्कर अंग्रेजों की सेना तथा हमारी सेना मे होने लगी। हम वहां पर दो वर्ष से अधिक रहे। अंग्रेजों ने देखा कि यहां पर लाखो आदमियो से लड़ना ठीक नहीं है क्योंकि अब उनकी सेना को कड़ा जवाब मिलने लगा था। दूसरी तरफ और भी लाखो आदमी हर महीने देश की आजादी की लड़ाई के समर्थक बन रहे थे। अंग्रेजों ने फरवरी 1860 को माफीनामे की एकतरफा घोषणा की। इस माफीनामे में सबको माफ करना तथा जब्त की जमीनें वापिस देना था।

"हम इस माफीनामा के बाद अपने गांव वापिस आ गए। पर यह अंग्रेजों का धोखा मात्र था।"

भूपसिंह का लालन-पालन मां द्वारा गांव में ही किया गया और उनका बचपन अधिकतर ताऊ महबूब सिंह राठौड़ तथा मां के साथ बीता। भूपसिंह की पहली शिक्षा गांव में ही हुई। गांव की चौपाल पर एक स्वतंत्रता सेनानी पढ़ाता था। फिर उनका दाखिला मालागढ़ के स्कूल मे कराया गया। भूपसिंह अपने ताऊजी के साथ पास गांवों में आते-जाते रहते थे। गांव मे हर आदमी कान के बराबर लाठी रखता था जिसका उपयोग नदी-नाले की गहराई नापने, उसे पार करने, सांप तथा जानवरों को डराने और शत्रुओं को परास्त करने के लिए किया जाता था। गांव की जमीन के मालिक जमींदार होते थे। गांव के लोग अंग्रेजों की नौकरी और मजदूरी को हेय दृष्टि से देखते थे। गांव का जमींदार भी फल, सब्जी, दूध आदि नहीं बेच सकता था क्योंकि ये सब चीजें आम जनता के खाने के लिए होती थीं।

भूपसिंह की बहन मोहर कुंवारी के लिए लड़का पसंद करने की बात गांव में शुरू हुई। बहुत खोजने के बाद कमला कुंवारी अपनी पुत्री की शादी धर्मसिंह सब-इन्सपेक्टर के साथ करने के लिए तैयार हुई। वह रेलवे के पुलिस विभाग में नौकरी करता था।

उन दिनों में होली सबसे बड़ा त्यौहार होता था जो बसंत पंचमी से शुरू होकर चैतबदी पंचमी तक चलाता था। रोज रात को आधी-आधी रात तक सभी पुरुष चौपाल पर इकट्ठे होकर होली गाते थे। "मस्त महीना है फागुन, सब पर चढ़े चौगुना रंग। छटो राग छत्तीस रागिनी, आठो पहर खुशी में दंग।"

होली पर बाजा भी बजाया जाता था। वह दो प्रकार का होता था। युद्ध का मारू बाजा और दूसरा नाच मारू बाजा। स्त्री-पुरुष खूब नाचते थे और गाते थे। देवर भाभी, मामी भानजा एक दूसरे पर रंग बरसाते थे। वैसे तो हर कोई रंग में हमेशा रंगा रहता था पर देवर तथा भानजा इसमें विशेष होते थे। लोग दूसरे गांवों से भी होली खेलने आते थे। ब्याह-शादी भी इस दौरान बहुत होती थी।

सन् 1891 में भूपसिंह बीच में ही पढ़ाई छोड़कर बहन तथा बहनोई के पास इन्दौर (होल्कर राज्य) चले गए। वहां भूपसिंह के बहनोई पुलिस में उच्च पद पर थे। अब वह वहां अन्य नौजवानों के सम्पर्क में आए। भूपसिंह ने बहनोई के पास रहकर बंदूक चलाना सीख लिया। कुछ समय बाद उनके बहनोई पदोन्नति पाकर किशनगढ़ राज्य (राजस्थान) में आ गए तथा पुलिस अधिकारी बन गये। भूपसिंह भी राजस्थान आ गए। वह अब एक नए युग में प्रवेश करना चाहते थे। वह था "क्रांतिकारी जीवन" जो उन्हें खून के रिश्ते से मिला था। अतः वह सन् 1892 में वापिस इन्दौर लौट गये, जहां फिर से वह पुराने साथियों के सम्पर्क में आ गए। वह अपने दूर के रिश्तेदार बलदेव सिंह सूबेदार के यहां

कैंटोनमेंट में रहते थे। सेना के अफसर अंग्रेज लोग थे। होल्कर राज्य अभी तक अंग्रेजों का कुछ वफादार माना जाता था पर क्रांतिकारियों ने सेना तथा राज्य में संबंध बना लिये थे।

क्रांतिकरियों से परिचय

भूपसिंह के रिश्तेदार सूबेदार बलदेव सिंह क्रांतिकारियों के अगुवा बन गए। अगले दो-तीन वर्षों में इन्दौर क्रांतिकारियों का गढ़ बनना शुरू हो गया। सन् 1898 तक अंग्रेज इसके बारे में कुछ न समझ सके। भूपसिंह ने अपने रिश्तेदार से कई प्रकार के हथियार चलाने सीख लिए थे। सन् 1900 के लगभग महाराजा होल्कर भी क्रांतिकारियों का सहयोगी बन गये। भूपसिंह रात-दिन क्रांतिकारियों की भर्ती पर निगाह रखते थे। सूबेदार साहब का घर क्रांतिकारियों का अड्डा बन गया था। सूबेदार साहब ने पूरी सेना को अंग्रेजों के खिलाफ कर दिया। अंग्रेजी अफसरों की नींद हराम होने लगी। पर भूपसिंह की गतिविधियों का किसी को पता नहीं चल पाया।

सन् 1905 में भूपसिंह का परिचय क्रांतिकारी साथी शचीन्द्र सान्याल से हुआ। सान्याल साहब ने उन्हें क्रांतिदल में सीधा भर्ती कर लिया तथा उन्हें मध्य भारत में क्रांति का कार्य सौंपा। यह क्रांति दल देशव्यापी सशस्त्र विद्रोह करना चाहता थ। अतः इसके सदस्यों का पहला कार्य देश के कैंटोनमैंटों पर कब्जा करना था जिससे सेना का दमन चक्र जनता पर न चल सके तथा खून-खराबा भी कम हो। सन् 1857 की लड़ाई अंग्रेजों ने सेना की सहायता से ही जीती थी। इसके बाद भूपसिंह (पथिकजी) का रास बिहारी बोस से सम्पर्क हुआ तथा वह "बंग अनुशीलन समिति" के भी क्रांतिकारी सदस्य बन गए।

पूरे देश में सशस्त्र विद्रोह की तैयारी बड़े जोरों से की जा रही थी। ढाका में समिति का मुख्य केन्द्र स्थापित किया गया। भूपसिंह 1907 में ढाका केन्द्र पर पहुंचे। वहां भूपसिंह ने क्रांतिकारियों के कार्यों का प्रशिक्षण लिया। अब वह पहली श्रेणी के क्रांतिकारी बन गए थे।

युगान्तर अखबार

श्री अरविंद घोष के छोटे भाई बारीन्द्र का माणिकतल्ला में एक बाग था। वहीं से 'युगान्तर' नामक समाचार पत्र निकाला जाता था। भूपसिंह भी वहीं रहते थे तथा अखबार निकालने के कार्य के अलावा बम बनाने के कार्य में सहयोग देते थे। यह बाग बमों तथा अन्य हथियारों का गोदाम भी था। उन दिनों अंग्रेजों का दमन चक्र बंगाल में चरम सीमा पर था। जगह-जगह पर नौजवानों को खुले आम यातनाएं दी जा रही थीं। उन्हें बंदी बनाया जा रहा था। कालेजों, विश्वविद्यालयों तथा स्कूलों के होस्टलों आदि में छापे मार कर झूठे मामलों में छात्रों को फंसाया जा रहा था। यहां तक कि लड़कियों को भी खबर पहुंचाने और अखबार बांटने आदि के आरोप में फंसाकर यातनाएं दी जा रही थीं। 'युगान्तर' समाचारपत्र ने अंग्रेजों की नीद हराम कर रखी थी। यह अखबार इतना प्रसिद्ध हो गया था कि इसका हर पाठक अपने को क्रांतिकारी दल का सदस्य समझने लगा था। कुछ समय के बाद भूपसिंह इसके मुख्य सम्पादकों में आ गए।

गवर्नर फेजर तथा जिलाधीश किंग्स फोर्ड की हत्या की तैयारी

बंगाल के गवर्नर फेजर तथा कलकत्ता के जिलाधीश किंग्स फोर्ड भारतीयों का बुरी तरह से दमन कर रहे थे। अतः क्रांतिकारियों ने

उन्हें खत्म करने की योजना बनाई। फ्रेजर की स्पेशल रेलगाड़ी पर बम फेंकने का कार्य भूपसिंह तथा उनके साथियों को सौंपा गया। बम चलती गाड़ी पर फेंका गया। फ्रेजर तो बच गए पर गाड़ी का इंजन तथा पटरी नष्ट हो गई। इससे इतनी दहशत फैली कि किंग्स फोर्ड अपना तबादला कराकर मुजफ्फरपुर (बिहार) चले गए। क्रांतिकारी युवक किंग्स फोर्ड से उसके द्वारा किए गए दमन का बदला लेना चाहते थे। अतः युवक खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी को बमों के साथ मुजफ्फरपुर भेजा गया। वहां फिटन कार पर बम फेंका गया था पर वह फिटन किंग्सफोर्ड की न होकर अंग्रेज वकील कनेडी की थी। कनेडी अपनी पत्नी के साथ उसे चला रहा था। अतः कनेडी दम्पत्ति मारे गए तथा फिटन पूरी तरह नष्ट हो गई। फोर्ड के बंगले से ही वकील कनेडी लौट रहे थे। वह दिन 10 अप्रैल 1908 का था। अब तो पुलिस तथा सेना ने जगह-जगह छापे मारे। 2 मई 1908 को मणिकतल्ला बाग पर छापा मारा गया। एक अखबार बांटने वाले ने मुखबिरी की थी। बाग से 36 क्रांतिकारी पकड़े गए। उनमें भूपसिंह भी थे। इनमें से कुछ को फांसी दे दी गई, कुछ को अलीपुर जेल में डाल दिया गया, कुछ को बंदी बनाकर काला पानी भेजा गया तथा कुछ को मुकदमों के बाद जमानतों पर छोड़ दिया गया। इसमें से क्रांतिकारी नरेन्द्रनाथ गोस्वामी सरकारी गवाह बन गया।

गोस्वामी को सजा देने के लिए अलीपुर जेल में बंदी साथी सतेन्द्र कुमार, कन्हाई लाल तथा भूपसिंह को सचेत किया गया। उस समय गोस्वामी जेल के सरकारी अस्पताल में था तथा इलाज करा रहा था। भूपसिंह सबूत न होने के कारण जेल से छूट चुके थे। परंतु दोबारा जेल में भेष बदल कर नौकरी करने लगे थे। साथ-साथ उपरोक्त दोनों साथियों से प्रतिदिन मिलने लगे। कुछ समय बाद भूपसिंह ने जेल में दोनों साथियों तक दो रिवाल्वर पहुंचा दिए। अब दोनों क्रांतिकारी बीमारी

का बहाना लेकर सरकारी अस्पताल मे भर्ती हो गए। सतेन्द्र कुमार ने गोस्वामी के पास खबर पहुंचायी कि मैं भी सरकारी गवाह होना चाहता हूं। गोस्वामी पुलिस की निगरानी मे अस्पताल मे इलाज करा रहा था। गोस्वामी सिपाही के साथ सतेन्द्र को मिलने आया। सतेन्द्र ने गोली चला दी जो गोस्वामी के पैर मे जा लगी। दूसरे क्रान्तिकारी कन्हाई लाल ने पहले अंगरक्षक सिपाही को गोली मारकर घायल किया तथा फिर भागते हुए गोस्वामी को गोली से मार दिया। दोनों क्रांतिकारी पकड़े गए।

सतेन्द्र कुमार को फांसी दे दी गई और उसका शव जेल में ही फूंक दिया गया। क्रांतिकारियों में विद्रोह की लहर दौड़ गई। रेलगाड़ियों पर बम फेंके गए और पुलिस वालों की हत्याएं की गईं। एक मई 1908 से 15 मई 1908 तक दस बारह पुलिस वाले मारे गए तथा अनेक घायल हुए। रेलगाड़ी की पटरी उड़ा दी गई। इन सब कार्यों में भूपसिंह का भी हाथ था। 15 मई 1908 को भूपसिंह ने ग्रेस्ट्रीट (कलकत्ता) में बम फेंका। बाद में 10 नवम्बर 1908 को दूसरे क्रांतिकारी कन्हाई लाल को भी फांसी दे दी गई। उनका जेल में 16 पौंड वजन बढ़ गया था। साथी खुदी राम बोस के जनाजे की तरह ही कन्हाई लाल का जनाजा भूपसिंह सहित भारी जनसमूह ने सड़कों पर निकाला। अंग्रेजी सरकार क्रांतिकारियों से भयभीत थी।

कलकत्ता बैंक में डकैती

2 जून 1908 को धन के लिए बैंक में डकैती डाली गई। उसमें भूपसिंह ने एक पहरेदार को मार डाला। डकैती डालने के बाद धन को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए रास्ते में भूपसिंह को एक सिपाही सहित चार और आदमियों को गोली से उड़ाना पड़ा।

अलीपुर जेल के सरकारी वकील विश्वास तथा सरकारी गवाह चटर्जी की हत्याएं

अलीपुर षड्यंत्र के मामले में सरकारी वकील तथा गवाह को गोली मारने का कार्य भूपसिंह तथा बसूजी को सौंपा गया। 10 फरवरी 1909 को दोनों क्रांतिकारी अदालत में पहुंचे, जहां सरकारी वकील विश्वास को इस मामले में पेश होना था। बसुजी ने अदालत में ही गोली दाग दी, विश्वास वकील गोली लगने से वहीं मर गया। बसुजी पकड़े गए पर भूपसिंह भागने में सफल हो गए। कुछ समय के बाद इन पर दोबारा अदालत में मुकदमा चला। वह फरार थे। डिप्टी सुपरिंटेन्डेट उनके मुकदमे के बाद अदालत से वापिस आ रहा था। भूपसिंह ने उसे देखते ही गोली मार दी। उसकी भी मृत्यु हो गई। इसके बाद भी भूपसिंह का नाम बंगाल की भूमि पर गूंजने लगा। फिर वह कुछ साथियों सहित दिल्ली में लौट आए।

जब लार्ड हार्डिग दिल्ली नगर में जश्न मना रहे थे तथा चांदनी चौक से हाथी पर बैठ कर गुजर रहे थे, तभी रास बिहारी बोस के साथ भूपसिंह (पथिकजी) ने हाथी पर बम फैंका। उससे लार्ड हार्डिग के सिर पर चोट लगी तथा अंगरक्षक मारा गया। भूपसिंह सभी साथियों सहित पुलिस की निगाह से बच कर भाग निकलने में सफल हो गए।

लाला लाजपतराय ने क्रांतिकारियों की इस वीरता पर मुग्ध होकर लिखा कि जिन क्रांतिकारियों ने चांदनी चौक में लार्ड हार्डिग पर बम फेंका "वे भारत माता के महान सपूत हैं तथा उन्होंने हमेशा याद रखने वाला कार्य किया है। इससे भी अधिक विश्वास दिलवाने वाली तथा हौसला बढ़ाना वाली बात तो यह है कि एक शक्तिशाली शानदार व तानाशाह साम्राज्य के सभी साधन और शक्ति उन महान सपूतों को

आज तक न पकड़ सकी तथा न ही उनका पता लगाने में समर्थ साबित हुई है।"

भूपसिंह के जीवन में दूसरा नया मोड़

27 सितम्बर 1914 को बजबज में दो पाशविक अत्याचार हुए। एक थी कामागाता मारू जहाज की घटना। उसकी खबर संसार में सभी जगह पहुंच गई। क्रांतिकारी विदेशो से वापिस भारत आने लगे तथा विदेशों में भारतीयों में भी असुरक्षा का भावना तीव्र हो गई। वह भी देश में वापिस आने लगे। कामागाता मारू जहाज के नेता क्रांतिकारी गुरुदत्त सिंह घायल होकर बच निकले। अब क्रांतिकारी संगठन भारत में सब जगह बनने लगे। पंजाब में भी इनकी गतिविधियां बंगाल तथा उत्तर प्रदेश की तरह और तेज हो गईं। रास बिहारी बोस ने भूपसिंह को मास्टर बाल मुकुन्द के साथ क्रांतिकारी संगठन बनाने के लिए राजस्थान भेजा। वहां आम जनता दोहरी मार का शिकार थी। एक ओर तो वहां राजा उनका शोषण कर रहे थे और दूसरी ओर अंग्रेज। किन्तु फिर भी वहां क्रांतिकारियों की गतिविधियों की शुरुआत नहीं हुई थी।

भूपसिंह ने राजस्थान में दो गुप्त सैनिक संगठन खड़े किए। एक का नाम था 'अभिनव भारती क्रांतिकारी संगठन' तथा दूसरे का नाम 'वीर भारत सभा'। क्रांतिकारी कार्य करने हेतु भूपसिंह ने मास्टर बाल मुकुंद को जोधपुर के महाराजा के लड़के का शिक्षक नियुक्त करवाया और स्वयं जोधपुर रेलवे वर्कशाप में मैकेनिक का कार्य करने लगे।

पहला विश्व युद्ध 1914 में इंग्लैण्ड तथा जर्मनी के बीच छिड़ गया। इस अच्छे अवसर को देखते ही स्वतंत्रता प्रेमी भारतीय सभी जगह सक्रिय हो गए। उस समय क्रांतिकारियों का साहस देखने लायक था। लाला हरदयाल जर्मनी की सहायता से भारतवर्ष को आजादी दिलवाना

चाहते थे। भूपसिंह ने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियां अजमेर तक बढ़ा दी थी। रात-दिन क्रांतिकारियों को हथियारों का प्रशिक्षण दिया जा रहा था।

परंतु लड़ाई शुरू होने के कुछ समय बाद फ्रांस ने इंग्लैण्ड को भारतीय क्रांतिकारियों की खबर देकर और भयभीत कर दिया। गदर पार्टी में भर्ती जोरों पर थी। अंग्रेजों ने अपने गुप्तचरों को आदेश दिया कि वह जैसे-तैसे भी हो गदर पार्टी के अधिक से अधिक सदस्य बनें तथा अपने भारतीय वफादारों को भी लालच देकर क्रांतिकारियों के संगठनों में घुसने के लिए कहें। कृपाल सिंह नाम का एक गुप्तचर क्रांतिकारी संगठन का सदस्य बन गया। उसने फरवरी 1915 में की जाने वाली क्रांति की खबर अंग्रेजी पुलिस को दे दी। क्रांति दल को कृपाल सिंह की मुखबिरी का पता चल गया। अतः कृपाल सिंह को नजरबंद कर दिया गया। अब देशव्यापी क्रांति का दिन 21 फरवरी 1915 की जगह 19 फरवरी 1915 कर दिया गया।

इसकी खबर भी 18 फरवरी 1915 को लाहौर में कृपाल सिंह तथा उनके साथियों ने पहुंचा दी। उधर 21 फरवरी की जगह 19 फरवरी की खबर भी सब जगह न पहुंच पाई क्योंकि अंग्रेजी तंत्रों द्वारा सब जगह खबरें रोककर झूठी खबर उड़ा दी गई कि सब कार्य ठीक ठाक चल रहा है।

राजस्थान में भूपसिंह हजारों साथियों के साथ अजमेर कैंटोनमैंट पर धावा बोलने की तैयारी कर रहे थे। अतः इसके लिए संकेत का इंतजार कर रहे थे। वह संकेत था कि जैसे ही खरबा स्टेशन के पास अहमदाबाद जाने वाली गाड़ियों की पटरी पर बम का धमाका हो वैसे ही अजमेर पर धावा बोलकर उसे आजाद घोषित कर दिया जाए। पर बम नहीं फटा। अतः संकेत न मिलने पर कुछ नही किया गया।

क्रांति दिवस का मतलब ही देश के लिए पूरी आजादी घोषित करना था तथा सभी प्रमुख स्थानों पर अंग्रेजी झंडो की जगह स्वदेशी झंडे फहराना तथा छावनियों पर कब्जा करके भारतीय सेना को उनकी कमांड सौंपना था।

22 फरवरी को कहीं लाहौर से अजमेर खबर पहुंच पाई जो बहुत दुखदायी थी। अतः अब भूपसिंह ने साथियों को बचाने के लिए आदेश दिया कि वे अपनी-अपनी बंदूकें तथा बमों के साथ अलग-अलग स्थानों की तरफ चले जाएं क्योंकि देशभर में कही तो क्रांतिकारियों को गोलियों से भूना जा रहा था और कहीं उन्हें हजारों की संख्या में जेलों में बंद किया जा रहा था। उस समय भूपसिंह की कमांड में हजारों बंदूकें तथा बम थे। सभी साथी भागने में सफल हो गए।

आठ दिन बाद भूपसिंह तथा अन्य पांच साथी अजमेर के पास सरवा किले में बंदी बना लिए गए। भूपसिंह अंग्रेजी फौज पर जो उसी किले में थी आक्रमण करने की योजना बना रहे थे, तभी खबर आई कि उन सब को सभी सुविधाओं से युक्त टाटगढ़ के किले में बदला जा रहा है। उनके कुछ साथियों को वही से रिहा कर दिया गया। भूपसिंह पांचों साथियों सहित टाटगढ़ के लिए तैयार हो गए।

तब क्रांति की लपटें दबी नहीं थीं। 12 मार्च 1915 को सोमदत्त शर्मा की मुखबिरी पर लाहौर से भूपसिंह के वारंट जारी किए गए तथा लाहौर जेल में बंदी करने के आदेश भी जारी किए गए। क्रांतिकारियों ने इसकी खबर किले में पहुंचा दी तथा कहा कि टाटगढ़ जिले में बदलने का तो बहाना है बल्कि लाहौर जेल भेजना मुख्य लक्ष्य है जिससे सभी क्रांतिकारी संगठनों का पता चल सके तथा मुख्य-मुख्य क्रांतिकारियों को फांसी दे दी जाए।

किले से भागना

अतः जब भूपसिंह घोड़े पर सवार होकर टाटगढ़ किले में प्रवेश कर रहे थे तभी घोड़े से कूद गए तथा भाग कर बच निकलने मे सफल हो गए। अब भूपसिंह साधु के भेष में घूमने लगे। रात-दिन चलने के बाद बहुत थक गए। जंगलों तथा बीहड़ों में चलते रहे। एक बार बहुत थकने के बाद वह एक चट्टान पर जाकर अभी सोये ही थे कि तभी उन्हें आभास हुआ कि उनकी टांग पकड़ कर कोई खीच रहा है। देखा तो एक शेर ने उनकी टांग पकड़ रखी थी। भूपसिंह के पास रिवाल्वर था। उन्होने शेर पर गोली दाग दी। शेर वही ढेर हो गया। रात को किसी तरह घायल पैर की पीड़ा सहन की। सूर्य निकलने से पहले वह जंगल से बाहर आकर किसी गांव में शरण लेना चाहते थे। उधर अंग्रेजी पुलिस ने सभी जगह उन्हें बंदी बनाने के लिए अपना जाल बिछा दिया था। गांव-गांव, शहर-शहर तथा सभी धार्मिक स्थलों पर पुलिस तैनात कर दी गई थी तथा आदेश दे दिया गया था कि जो व्यक्ति भूपसिंह को शरण देगा वह अंग्रेजी शासको का दुश्मन होगा। सभी रियासतो के राजाओं को भी सतर्क कर दिया गया था कि वे अंग्रेजी पुलिस की मदद करें। सरकारी कर्मचारी भी हर गांव की तलाशी ले रहे थे। भूपसिंह जिधर भी जाते उधर ही पुलिस वाले दिखाई पड़ते। उनके भाग निकलने की चर्चा पूरे देश में फैल चुकी थी। एक गांव से दूर एक झोपड़ी थी। उसमें रहने वाली बुढ़िया ने उन्हें सुबह के समय भागते हुए देखा तो प्रेम भरे शब्दो में कहा "तुम शायद भारत मां के महान सपूत भूपसिंह हो तथा टाटगढ़ के किले से भागे हो। क्रांतिकारी भूपसिंह मैं तुम्हारी मां हूं। अतः तुम मेरी झोपड़ी मे आराम करो।" वह वहां रुक गए। पैर की पट्टी बांधी तथा भोजन भी कई दिनो के बाद किया।

पैर की पीड़ा कुछ कम हुई। सूर्यास्त होने पर भूपसिंह गांव के धोबी के एक घोड़े पर चढ़कर वहां के राजा के यहां पहुंचे। राजा से कुछ घोड़े मांगे। राजा डर गया तथा कायरता दिखाते हुए बोला "मैं अपने घोड़े नही दे सकता।" भूपसिंह ने कहा कि तुम्हें जान प्यारी नही है और रिवाल्वर उसकी ओर किया। राजा मान गया। अगले दिन कुछ घोड़े टाटगढ़ किले पर भेजे गए तथा बाकी क्रांतिकारियों को भी भूपसिंह ने छुड़वा लिया था। सबको अलग-अलग जगहों पर भेज दिया गया। भूपसिंह ने राजा से शरण मांगी परंतु राजा ने शरण देने से इंकार कर दिया। वह पैर के घाव का इलाज करना चाहते थे। राजा ने उन्हें केवल पच्चीस रुपये दिए और कहा कि शीघ्र ही मेरे राज्य से बाहर हो जाइए क्योंकि मैं अंग्रेजों से दुश्मनी नहीं मोल ले सकता। भूपसिंह वहां से गुरला गांव पहुंचे। गुरला गांव में वह पैर ठीक होने तक रहे।

गुरला गांव में ही भूपसिंह साधु हो गए तथा गांव-गांव घूमने लगे। एक गांव में एक साधु रहता था। वह तीर्थ करने चला गया था। अतः वह उसके आश्रम में ठहर गए। जैसे-जैसे समय बीतता गया। उनका नाम तथा कार्य आसपास के गांव में आग की तरह फैलने लगा। वह लोगों से कहते थे कि मेहनत करो तथा शोषण को मत सहो। शोषण भले ही वह जमींदारी का हो या राजा का हो या अंग्रेज का हो। बच्चों को शिक्षा दो। लड़कियों को आदर दो। भूपसिंह की चर्चा जमीदारों तक पहुंच चुकी थी। भिनाष (राजस्थान) के राजा तथा रानी भूपसिंह के दर्शन हेतु आश्रम में आए। दर्शन के बाद राजा तथा रानी ने उनसे प्रार्थना की कि वह राजघराने के मठ में रहें। परन्तु उन्होने स्वीकार नहीं किया। इसी बीच पुलिस वहां पहुंच चुकी थी पर जनता के दबाव में कुछ नही कर सकी।

भूपसिंह को भी पुलिस की भनक पड़ गई थी। अतः उन्होंने साधु भेष त्याग दिया तथा पहले की तरह शस्त्र धारण कर लिए। इस बीच वह गांव छोड़ कर कस्बा मेंगटिया आ गए। पर वहां पर भी पुलिस चौकन्नी थी। अतः वह गांव काकरोली पहुंचे। पुलिस उनके पीछे लगी हुई थी।

भूपसिंह से नाम विजयसिंह 'पथिक' रख लिया

अब उन्होंने अपना नाम भूपसिंह की जगह बदल कर विजय सिंह पथिक रख लिया। दाढ़ी भी बढ़ा ली तथा पगड़ी बांधने लगे। गांव काकरोली छोड़कर गांव भाणा आ गए। वहां कुछ समय रहे। अब जो भी पथिकजी को देखता वही उनके रोब और प्रभाव में आ जाता था। क्योंकि पथिकजी का कद तथा शरीर देखने लायक था। उस पर भी रंगीली पगड़ी दाढ़ी के साथ चार चांद लगा रही थी। अब पथिकजी भोही गांव चले गए थे। इस समय पथिकजी पूरी तरह से एक मेवाड़ी दिखते थे।

मेवाड़ की रियासत में जब पथिकजी ने देखा कि यहां सुरक्षा खतरे में है तो वह मेवाड़ छोड़कर चित्तौड़ चले गए। यहां ओड़छा जागीरदार स्वाधीनता प्रेमी थे। अतः जिसकी पथिकजी को तलाश थी वह ओड़छी में मिल गया। अब वह पुलिस के जाल से बाहर होकर कुछ करना चाहते थे।

शिक्षा का प्रसार

पथिकजी शिक्षा के प्रसार में लग गए। शिक्षा के प्रसार हेतु गवर्नर को पत्र लिखने लगे। थोड़े समय बाद गवर्नर के पत्र भी जवाब के रूप में आने लगे। परंतु पत्र-व्यवहार अजमेर से गुप्त पते पर ही होता

था तथा पथिकजी भी अपने पत्र अजमेर से ही डलवाते थे। पथिकजी का कार्यक्षेत्र पूरी ओड़छी जागीर मे फैल गया।

इसी बीच साधु सीताराम दास तथा मगनलाल पुजारी पथिकजी से एकांत मे मिले। उन दोनो ने पथिकजी को बतलाया, "आपको पकड़ने के लिए अंग्रेजी सरकार ने बीस हजार रुपये का इनाम रखा है। आप रेलवे लाईन के पास रह रहे हो जो हमेशा खतरे से भरा हुआ स्थान है। अतः अच्छा होगा कि आप हम लोगो के साथ बिजोलिया चलो, हम आपको लेने आए हैं। वहां आपके अन्य साथी भी है तथा हम सबकी यही राय है। वहां आने-जाने के रास्ते भी नही है। वह मेवाड़ का अण्डमान है। वहां जनता संगठित है तथा आपके अधीन किसान आंदोलन चलाना चाहते हैं। उसे अपरमाल अंचल भी कहते हैं।" पथिकजी ने उन्हें कहा, "मै यही से बिजोलिया किसान आन्दोलन चलाऊंगा। समय पड़ने पर वहां भी आ सकता हूं।"

बिजोलिया का किसान आन्दोलन

शचीन्द्र नाथ सान्याल तथा रास बिहारी बोस की सलाह पर पथिकजी राजस्थान मे क्रांति का आयोजन करने आए थे। वह इस कार्य के लिए खरवा ठाकुर गोपाल सिंह से मिले थे पर 19 फरवरी 1915 की क्रांति के असफल होने पर पथिकजी को टाटगढ़ के किले में बन्द किया जा रहा था। फिरोजपुर (पंजाब) षड्यंत्र अभियोग में भी पथिकजी के वारंट जारी हो गए थे पर पथिकजी पर इन सबका कोई प्रभाव न पड़ा। शिक्षा प्रसार हेतु उन्होंने भाणा गांव में एक पाठशाला स्थापित की। यही उनकी भेंट डूंगर सिंह भाटी से हुई जो मोही गांव में थे। बारहट केशरी सिंह (भाट) के दामाद ईश्वर दास असिया से भी भाणा गांव में उनकी भेंट हुई। पथिकजी ने कुछ समय बाद चित्तौड़ में हरिभाऊ

किकर द्वारा संचालित विद्या-प्रचारिणी सभा से नाता जोड़ लिया। इसी संस्था की एक शाखा साधु रामदास ने बिजोलिया में स्थापित की थी। इसी बीच पथिकजी का परिचय चित्तौड़ में विद्या प्रचारिणी सभा की मीटिंग में साधु रामदास से हुआ। साधु रामदास पथिकजी से बहुत प्रभावित हुए और हमेशा के लिए उनके शिष्य बन गए।

अब पथिकजी अपने क्रांतिकारी जीवन में कुछ परिवर्तन लाना चाहते थे। अतः उन्होंने बिजोलिया को अपनी कर्मभूमि बनाने की ठानी। ओड़छी से कुछ दिनों तक वह बिजोलिया के किसान आंदोलन का नेतृत्व करते रहे । आंदोलन की खबरें चारो ओर फैल रही थीं। सभी चाहते थे कि पथिकजी शीघ्र ही किसानों को अपने दर्शन दें। यह पथिकजी के जीवन में तीसरा मोड़ था। एक दिन पथिकजी ओड़छी से ऊंट पर सवार हुए। ऊंट पर बैठे छः फुट लम्बे, हृष्ट-पुष्ट शरीर, चमकते माथे, गले में लटकते हुए रिवाल्वर, कोट की दोनों जेबों में भरी रिवाल्वर की गोलियो वाले पथिकजी ने परमपिता को सुबह की पहली नमस्कार की। ओड़छी की जनता को प्रणाम किया तथा ऊंट को ऐड़ लगाई। सूर्य अपनी किरणों के प्रकाश की पगडंडी फैला रहा था, भारत मां यह सब कुछ देखकर प्रसन्न थी। भले ही क्रांति सफल नहीं हुई पर उसका महान सपूत पथिक तो जीवित बच गया था।

पथिकजी बिजोलिया में 1916 में पहुंचे थे तथा हमेशा के लिए लाखों बिजोलियों, खासकर किसानों तथा मजदूरो के, प्यारे पथिक बन गए थे। पथिकजी अब विद्या प्रचारिणी सभा के माध्यम से किसानों से संपर्क साधने लगे। उनकी अंतरात्मा आजादी के लिए तड़प रही थी। पथिकजी जान चुके थे कि भारतवर्ष बहुत बड़ा देश है। यहां अनेक धर्म, जातियां, प्रांत तथा सभ्यताएं हैं और यहां सशस्त्र क्रांति की संभावना नही के बराबर है। अतः अच्छा होगा कि किसानो को संगठित किया

जाए क्योंकि वे जानते थे कि भारतीय किसान सदियों से नाममात्र के किसान ही हैं। उन्हें स्वामित्व का अधिकार नहीं है। उनके ऊपर जमींदारी है, राजा हैं तथा अंग्रेजी शासक हैं। जब किसान ही नहीं हैं तो खेती मजदूरी की बात तो सोचना भी सपने के बराबर है। पथिकजी गांव-गांव जाते तथा गांव वालों को संगठित करने की कोशिश करते। वह अपनी निम्न पंक्तियां गाकर सुनाते "यश वैभव सुख की चाह नहीं। परवाह नही जीवन रहे। यदि इच्छा है तो यह है जग में स्वेच्छाचार, दमन न रहे।"

पथिकजी के बहुत से शिष्यों ने उनसे आजीवन समाज-सेवा करने की दीक्षा ली। बिजोलिया के जमीदार ठिकाने की नौकरी छोड़कर माणिक्य लाल वर्मा हमेशा के लिए पथिकजी की सेवा में आ गए। पथिकजी ने वर्मा जी को विद्या प्रचारिणी सभा का मंत्री नियुक्त किया। किसानों का मजबूत संगठन बनाने हेतु पथिकजी, वर्माजी तथा दासजी का सहयोग लेने लगे। कार्य जोर-शोर पर था तभी अंग्रेजी खुफिया पुलिस ने पथिकजी की पूरी गतिविधियों का पता लगाकर मेवाड़ के राणा को बाध्य किया कि वह पथिकजी को शीघ्र से शीघ्र गिरफ्तार करें। अतः मेवाड़ शासक ने पथिकजी के वारंट निकलवा दिए। पथिकजी ब्रिटिश सरकार के गुप्तचरों तथा गिरफ्तारी के वारंट से बचने के लिए स्वयं भूमिगत हो गए तथा अन्य साथियों को किसानों के लिए कार्य करते रहने को कहा।

पथिकजी का नया ठिकाना

अब जब उमाजी के खेड़े को पथिकजी ने अपने रहने का नया स्थान बनाया। यह स्थान जंगल में उजाड़ पड़ा था। वहीं पथिकजी ने एक झोपड़ी बनाई। कुछ समय के बाद वर्माजी ने उमाजी के खेड़े में एक स्कूल खोल दिया ताकि पथिक साहब से सीधा संबंध रखा जा सके। उमाजी के खेड़े की झोपड़ी बिजोलिया किसान क्रांति का केंद्र बन

गई। इससे पहले यह जगह वीरान थी। पथिकजी उस दिन की तलाश में थे जिस दिन एक नए संगठन का नाम रखे। अतः सन् 1917 में हरियाली अमावस्या के दिन "ऊपर भालपंच बोर्ड" के नाम से एक संगठन स्थापित किया गया, जिसका केंद्र उमाजी का खेड़ा था। इस बोर्ड का सरपंच मन्ना पटेल एक किसान था। अब किसान क्रांति का बिगुल बजा दिया गया। पथिकजी ने भूमिगत रहते हुए पंच (पंचायत) बोर्ड के सदस्यो तथा किसानों को सम्बोधित करते हुए निम्न आह्वान किया "हरियाली अमावस सुखद, मुहूर्त को जान लो। स्वतंत्रता के हित अब युद्ध की ठान लो।" "पथिकजी की जय" के गगनभेदी नारों से पूरा बिजोलिया ठिकाना गूंज उठा।

बिजोलिया ठिकाने* के किसान दो प्रकार के करों से बहुत परेशान थे। एक था तलवार बंदी की लागत और दूसरा लाट-कूंता। इसके बाद तीसरी प्रकार के कर के आने पर किसान बौखला गए। वह था प्रथम विश्व युद्ध से संबंधित युद्ध का चंदा। राजस्थान में राजा तथा जमींदार अपने-अपने कर अलग-अलग से लगाते थे तथा ब्रिटिश सरकार तीसरे प्रकार के कर समय-समय पर किसानों पर लगाती थी। अतः रजवाड़ों में रहने वाले किसान हमेशा करों के बोझ से दबे रहते थे तथा शोषण के शिकार रहते थे।

पथिकजी ने किसानों का आह्वान किया कि युद्ध का चंदा न दें। किसान तैयार हो गए तथा उन्होंने ठिकाने को युद्ध का चंदा देने से इंकार कर दिया।

इसी समय एक प्रभावशाली किसान नारायण पटेल को ठिकाने ने

---

* ठिकाना कर वसूली के लिए बनाया जाता था जो सीधे जमींदार तथा राजा के अधीन होता था। इसमें बहुत आदमी नौकरी करते थे।

बेगार देने के लिए मजबूर किया। पटेल ने इसकी शिकायत बोर्ड को की तथा बेगार देने से इंकार कर दिया। ठिकाने ने पटेल को बंदी बना लिया। रात्रि भर में यह समाचार आग की तरह पूरे ऊपरमाल के सभी गांवों में फैल गया। सुबह तक दो हजार से अधिक किसान सत्याग्रह के लिए बिजोलिया में इकट्ठे हो गए तथा नारा दिया कि या तो नारायण पटेल को छोड़ो अन्यथा हमें भी बंदी बनाओ। भूमिगत रह कर पथिकजी किसानों का नेतृत्व कर रहे थे। ठिकाने के अधिकारी यह देखकर घबरा गए तथा जमींदारों को सूचना दी कि यदि पटेल को न छोड़ा गया तो किसान किसी भी प्रकार का कर न देने का आंदोलन छेड़ने को तैयार हैं। हजारों की संख्या में किसान बिजोलिया पहुंच चुके हैं। अतः यह निर्णय लिया गया कि नारायण पटेल को छोड़ दिया जाए।

किसानों की इस जीत से जनता में पंचायत की धाक जम गई। ऊपरमाल के किसानों तथा आम जनता में पथिकजी के नेतृत्व की धाक तो ऐसी जमी कि गांव-गांव तथा गली-गली में पथिकजी का ही नाम सुना जाने लगा।

पथिकजी ने अब भूमिगत रहते हुए युद्ध के चंदे का विरोध किया। किसानों की आवाज ने ठिकानों की नीद हराम कर दी। अतः आंदोलन के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं, सीताराम दास तथा प्रेमचंद भील को अन्य किसानों के साथ पकड़ लिया गया परन्तु पथिकजी ठिकाने के हाथ न आए। उन पर उनकी अनुपस्थिति में राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। मुकदमे के समय लगभग 1500 आदमियों ने गवाही दी कि हमें युद्ध का चंदा न देने के लिए किसी ने नहीं भड़काया, हम तो लगान, लाग-बांधों तथा कूंते के भार से दबे हुए हैं, अतः चंदा नहीं दे सकते। किसानों का एक स्वर ठिकाने में पहली बार सुनाई दिया था। उधर पथिकजी ने बिजोलिया के किसानों पर हो रहे अत्याचारों के बारे में लोकमान्य तिलक को कुछ पत्र लिखे। तिलकजी ने तुरंत मेवाड़ के महाराणा फतेह

सिंह को पत्र लिखा कि आपका वंश तो स्वतंत्रता प्रेमी है तथा आप स्वयं भी स्वतंत्रता प्रेमी हैं। अतः आपके राज्य में स्वतंत्रता के उपासकों को जेलो में डालना महाकलंक की बात है। महाराणा फतेह सिंह के आदेश पर सब आन्दोलनकारी जेल से छोड़ दिए गए।

ठिकानों की चेतावनी

अब पथिकजी ने और जोरों से किसानों के आंदोलन का नेतृत्व किया। हजारों कार्यकर्त्ता पंचायत के सदस्य बन गए। पथिकजी ने ऊपरमाल के स्त्री, पुरुष और बच्चों को आंदोलन के रंग में पूरी तरह रंग दिया था। किसान पंचायत ने ठिकाने को चेतावनी दी कि अब किसान अनुचित लागतें तथा बेगार नहीं देंगे। पूरा मेवाड़ पथिकजी के. दर्शनों का इच्छुक दिखाई देने लगा पर वारंट अभी तक वापिस नहीं लिया गया था।

पथिकजी ने उत्तर भारत में सबसे पहला किसान आंदोलन चलाया। वह पूरे देश में किसान आंदोलन चलाने के लिए सुव्यवस्था करना चाहते थे और उन्होंने इसके लिए प्रचार सामग्री भी तैयार की। साथ ही वह क्रांतिकारियों से भी सीधा संबंध रखते थे।

विद्यार्थीजी को राखी

प्रसिद्ध पत्रकार तथा देशभक्त गणेश शंकर विद्यार्थी कानपुर से निकलने वाले 'प्रताप' अखबार के मुख्य संपादक थे। पथिकजी ने उन्हें बिजोलिया के किसानों की ओर से रक्षाबंधन पर एक चांदी की राखी भेजी। विद्यार्थीजी ने राखी को स्वीकार किया तथा बिजोलिया किसान आंदोलन हेतु अपनी सेवाएं अर्पित करने के लिए एक पत्र पथिकजी को लिखा। विद्यार्थीजी ने अखबार सहित अपने सभी साधनों द्वारा राखी के वचन को जीवन-भर निभाया। अब पथिकजी तथा विद्यार्थीजी सच्चे मित्र बन गए थे।

मेवाड़ के राजतंत्र को यह संदेह हो गया कि नायब अधिकारी श्री डूंगर सिंह भाटी पथिकजी से मिले हुए हैं। अतः मेवाड़ सरकार ने पहले उनके स्थान पर दीपपाल और बाद में माधोसिंह कोठारी को नियुक्त किया। कोठारी ने आते ही किसानों को लागतें तथा बेगार देने के लिए कष्ट देने शुरू कर दिए पर किसानों ने साफ शब्दों में दोनों करों को देने से इंकार कर दिया। इस पर ठिकाने ने 51 किसानों को जेल भेज दिया। पथिकजी इस समय देशव्यापी किसान आंदोलन हेतु विद्यार्थीजी से मिलने कानपुर गए हुए थे। वहां से सीधे पथिकजी 1918 में दिल्ली में होने वाले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अधिवेशन में चले गए। पथिकजी के बाहर रहने के समय वर्माजी तथा साधुजी बिजोलिया किसान आंदोलन का संचालन कर रहे थे।

वर्माजी को पथिकजी का आदेश मिला कि वह सीधे पंचायत के पांच सदस्यों के साथ तुरंत दिल्ली आएं। वर्माजी साथियों सहित दिल्ली पहुंचे जहां सबकी मुलाकात विद्यार्थीजी से हुई। दिल्ली से नए उत्साह के साथ बिजोलिया के आंदोलनकारी किसान वापिस मेवाड़ लौटे। बिजोलिया स्थल पर पंचायत की बैठक में तय किया कि अब आगे बेगार नहीं देंगे। कुछ समय बाद सभी मुख्य कार्यकर्त्ताओं को, जिनमें वर्माजी तथा साधुजी भी थे, गिरफ्तार कर लिया गया। ठिकाने ने किसानों की खड़ी फसल को काट लिया, किसानों को मारा-पीटा गया, बेइज्जत किया गया तथा दंड की और ज्यादा रकम उन पर लाद दी गई। पथिकजी ने अपने पत्रों द्वारा गोरी सरकार को ठिकाने के अत्याचारों के बारे में अवगत कराया। अखबारों में बिजोलिया के अत्याचारों की खबरें खूब छपी।

केंद्रीय सरकार की चिंता

केंद्रीय सरकार की सलाह पर अप्रैल 1919 में न्यायमूर्ति बिन्दुल भाई भट्टाचार्य की अध्यक्षता में एक जांच आयोग की नियुक्ति की गई।

पथिकजी की सलाह पर किसानों ने आयोग के सामने अपनी यह मांग रखी कि पहले सभी साथियों को जेल से रिहा किया जाए तभी हम लोग आयोग से सहयोग करेंगे। आयोग ने मांग को स्वीकार कर लिया। अतः सभी किसानों को जेलों से छोड़ दिया गया। आयोग ने दोनों पक्षों की बातें दस दिन से अधिक तक सुनी तथा न्यायमूर्ति ने अपना फैसला देते हुए कहा कि अनावश्यक लागतें समाप्त की जानी चाहिए तथा बेगार लेना तुरंत बंद किया जाना चाहिए। मेवाड़ सरकार ने बहुत समय तक आयोग की सिफारिशों पर कोई ध्यान नहीं दिया। तब पंचायत ने निर्णय लिया कि हम लागतें नही देंगे। इस पर मेवाड़ ठिकाने ने कहा कि बिना बेगार लागतें नही ली जाएंगी। ठिकाना अपनी हठ पर था तथा उसी समय उसने फैसला किया कि सिंचित भूमि पर कर बढ़ाया जाए। अब तो किसानों का रोष बढ़ गया। पंचायत ने निर्णय लिया कि सिंचित भूमि किसान नहीं जोतेंगे। ठिकाने ने घोषणा की जो सिंचित भूमि नही जोतेगा उसे भी सिंचित भूमि की बढ़ी लागतें देनी होंगी। ठिकाना अपनी हठ पर अड़ा था। अतः दोबारा किसानों तथा ठिकाने में समझौते के लिए पथिकजी ने फिर मेवाड़ के महाराणा पर कांग्रेस पार्टी का दबाव डलवाया। तब कहीं जाकर मेवाड़ ठिकाने ने घोषणा की कि जो जमीन जोतेगा, उसी पर ही पहले वाली लागतें लगेंगी। बेगार प्रथा हमेशा के लिए बंद कर दी गई। परंतु कुछ सिफारिशें लागू नहीं की गईं।

अमृतसर में कांग्रेस पार्टी का अधिवेशन

सन् 1919 के कांग्रेस अधिवेशन में बिजोलिया के किसानों की शेष समस्याओं के बारे में पथिकजी ने बाल गंगाधर तिलक द्वारा एक प्रस्ताव रखवाया। परंतु महात्मा गांधी ने सलाह दी कि प्रस्ताव अभी नहीं लाया जाए बल्कि पहले मदन मोहन मालवीय मेवाड़ के महाराणा से मिलकर इस मामले को तय करने का यत्न करेंगे। अतः प्रस्ताव वापिस

ले लिया गया। इस बीच महाराणा ने एक ओर आयोग की सिफारिशों को ठीक पाया पर तब भी शेष सिफारिशों पर ठिकाने ने कोई निर्णय लिया। मालवीयजी महाराणा से मिले पर उन्हें समझौता कराने में कोई सफलता नहीं मिली। इस प्रकार किसान पंचायत तथा ठिकाने में गतिरोध बना रहा।

गांधीजी से मुलाकात

पथिकजी गांधीजी को मिलने के लिए बंबई गए तथा उन्होंने गांधीजी को विस्तार से बिजोलिया के किसानों की कठिनाइयों के बारे में अवगत कराया। गांधीजी किसानों की करुण गाथा को सुनकर बहुत दुःखी हुए तथा तुरंत अपने सचिव महादेव देसाई को पथिकजी के साथ बिजोलिया भेजा।

देसाई की रपट

श्री महादेव देसाई ने अपनी पूरी रपट लिखित रूप में गांधीजी को दी। गांधीजी रपट पढ़कर आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने पथिकजी को वचन दिया कि यदि मेवाड़ का ठिकाना किसानों की मांगें नही मानता तो वह स्वयं बिजौलिया के किसानों का नेतृत्व करेंगे। इसी बीच गांधीजी ने महाराणा फतेहसिंह को एक पत्र भी लिखा। पर महाराणा पर इन सब बातों का तनिक भी असर न हुआ। फतेहसिंह स्वयं अपने राज्य के लिए अंग्रेजो के सामने गिड़गिड़ा रहे थे। दिनोंदिन अंग्रेज महाराणा के अधिकार कम करते जा रहे थे। अंत में उन्होंने उन्हें महाराणा के पद से हटा दिया।

वर्धा (गुजरात) से पत्र का प्रकाशन

गांधीजी विजय सिंह पथिक से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने पथिकजी को उनकी बम्बई यात्रा के समय नागपुर में कांग्रेस अधिवेशन (1920) से पहले कहा कि बिजोलिया किसान आंदोलन तो अन्य साथी चलाते रहेंगे, आप अपनी पूरी टोली के साथ वर्धा आ जाओ। मैं चाहता हूं कि एक देशव्यापी अखबार हिन्दी में निकाला जाए जिसका कार्यालय वर्धा में हो तथा आप उसके मुख्य संपादक बनें। पथिकजी ने गांधीजी का प्रस्ताव मान लिया। अतः पूरी टोली के साथ वह वर्धा आ गए।

राजस्थान केसरी

पत्र का नाम 'राजस्थान केसरी' रखा गया। पथिंकजी इसके संपादक, श्री रामनारायण चौधरी तथा श्री ईश्वर दास असिया, सह-सम्पादक, श्री हरिभाऊ किंकर व्यवस्थापक, श्री कन्हैयालाल मंत्री तथा आर्थिक जिम्मेदारी सेठ जमनालाल बजाज पर डाली गई।

'राजस्थान केसरी' अखबार पूरे भारतवर्ष में लोकप्रिय होने लगा। अंग्रेज सरकार इस लोकप्रियता से बहुत परेशान थी। क्रांतिकारियों की गतिविधियां दोबारा बढ़ गईं थीं। किसान आन्दोलन जगह-जगह सिर उठा रहे थे। गलत कर वसूली पर अंकुश लगने लगा था। पथिकजी की सब जगह वाह-वाह हो रही थी। गांधीजी चाहते थे कि अखबार दूसरी भाषाओं में भी निकाला जाए पर इसी समय देश के उद्योगपतियों ने बजाज साहब पर दबाव डालना शुरू किया तथा बतलाया कि यह अखबार क्रांतिकारियो तथा सुधारवादियों का मुख बन गया है। इसके चलते हुए सभी अखबार सिकुड़ रहे हैं। पूंजीपतियों के खिलाफ भी आवाजें उठने लगी हैं। अतः सात महीने के बाद बजाजजी ने अखबार को धन देने में असमर्थता दिखाई। गांधीजी भी कुछ न कर पाए।

सन् 1920 में नागपुर कांग्रेस अधिवेशन

सन् 1920 में राष्ट्रीय कांग्रेस का अखिल भारतीय अधिवेशन नागपुर में हुआ। राजस्थान से पथिकजी अन्य साथियों के साथ, जिसमें बिजोलिया किसान आन्दोलन के नेता तथा किसान भी थे, नागपुर कांग्रेस पार्टी के अधिवेशन में शामिल हुए। वहीं गांधी जी तथा अन्य साथियों से बिजोलिया आंदोलन के बारे में खुलकर बातें हुईं। गांधीजी ने असहयोग आन्दोलन की भूमिका पर पथिकजी से बातें की तथा पथिकजी ने कहा कि राजस्थान में किसान आन्दोलन के साथ असहयोग आन्दोलन भी जोरों से चलाया जाएगा।

राजस्थान सेवा संघ

पथिकजी साथियों सहित वापिस राजस्थान आ गए। पथिकजी ने अजमेर में नए संगठन 'राजस्थान सेवा संघ' की नींव डाली तथा कुछ साथियों को बिजोलिया वापिस भेज दिया। पथिकजी की तीव्र इच्छा थी कि पूरे राजस्थान में सेवा संघ की शाखाएं शीघ्र स्थापित की जाएं और वह रात-दिन इसके लिए कार्य करने लगे।

'नवीन राजस्थान' अखबार

राजस्थान सेवा संघ का कार्य दिनों दिन फैलता जा रहा था। अतः अब पथिकजी ने 'नवीन राजस्थान' नामक समाचारपत्र का प्रकाशन भी अजमेर से शुरू किया। यह अखबार शीघ्र ही बहुत लोकप्रिय हो गया तथा किसान आंदोलनों, शोषितों तथा पीड़ितों की खबरों और दलालों के काले-धंधों के बारे में पथिकजी अब पूरे पृष्ठ लिखने लगे। अखबार में एक पृष्ठ राजाओं के शोषण के खिलाफ लिखा जाने लगा।

किसानों की लागतें, लगान तथा बेगार बंद कर देने से ठिकाने की आमदनी पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। कुछ अन्य काले धंधों का पता चलने पर ठिकाने की आमदनी बंद-सी हो गई। दूसरी तरफ पुलिस पर खर्च बढ़ गया क्योंकि व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस पर अधिक धन खर्च करना जरूरी हो गया। इन्हीं दिनों पथिकजी के अनुरोध पर अर्जुन लाल सेठी बिजोलिया आए तथा उन्होंने वहां किसान आंदोलन का संचालन देखा। वह जहां भी जाते वहीं हजारों किसान उनका स्वागत करते। सेठीजी ने 'नवीन राजस्थान' पत्र की बहुत प्रशंसा की। पथिकजी को तो 'राजस्थान का शेर' कहा।

अब कुछ ठिकानों ने पंचायत तथा सेवा संघ से समझौता करना चाहा पर उनके अधिकारियों ने कठिनाइयां खड़ी कीं। इस कारण समझौता नहीं हो पाया। किसान आंदोलन अब पूरे राजस्थान में फैल चुका था। पथिकजी सभी जगह जाकर इन आंदोलनों का संचालन स्वयं भी कर रहे थे और स्थानीय अगुवा भी रात-दिन तैयार कर रहे थे। जब समझौता नहीं हो पाया तो पथिकजी की सलाह पर पंचायत ने निर्णय लिया कि किसान अब ठिकानों को किसी भी प्रकार का कर नहीं देंगे तथा न ही ठिकानों की कचहरी में ही जाएंगे। किसानों के संगठन बहुत मजबूत हो गए थे।

सामाजिक कार्य

किसान आंदोलन के साथ-साथ कुछ सामाजिक कार्यों को भी पथिकजी ने अपने हाथ में लिया। समाचार-पत्र में भी इन सामाजिक कार्यों के बारे में लिखा जाने लगा। राजस्थान में शराब बहुत पी जाती थी। पथिकजी ने नशाबंदी का प्रचार जोरों से किया। कुछ समय बाद बहुत से किसानों पर इसका असर दिखाई देने लगा और उन्होंने शराब पीना बंद कर दिया। इसके बाद पथिकजी ने 'मृत्यु-भोज' पर पाबंदी लगाने का अभियान

चलाया। इसको राजस्थान में 'नुकता' भी कहते हैं। इस पर भी कुछ हद तक अंकुश लगा। इससे गांव वाले साहूकारों के कर्ज से मुक्त होने लगे। तीसरा सामाजिक कार्य पथिकजी ने तम्बाकू पीना बंद कराने हेतु जगह-जगह सभाएं कीं। इसकी बुराइयों को अपने समाचारपत्र में भी छापा। बाल-विवाह को बंद करने के कार्य को भी हाथ में लिया। लोगों को इसकी बुराइयों के बारे में समझाया। सती प्रथा की घोर निंदा की तथा विधवा-विवाह पर भी बहुत जोर दिया। पथिकजी ने स्वयं एक विधवा राजपूत महिला से शादी करके मेवाड़ में एक उदाहरण प्रस्तुत किया। राजपूतों में सती प्रथा बहुत थी तथा विधवा-विवाह कोई करता ही नही था। पथिकजी ने न केवल विधवा-विवाह किया बल्कि यह विवाह अंतर्जातीय भी था जिससे रजवाड़े तिलमिला गए पर पथिकजी का कुछ न बिगाड़ पाए।

सन् 1921 में बारिश होते ही किसानों ने फसल बोई। जब फसल पक गई तो किसानों ने 8 अक्टूबर 1921 को बिजोलिया ठिकाने को पथिकजी की सलाह पर नोटिस दिया कि वह एक सप्ताह के अंदर "कूंता" कर ले अन्यथा फसल काट ली जाएगी। ठिकाने की ओर से खबर आई कि पहले बढ़ी हुई लागतें दी जाए वरना कूंता नहीं किया जाएगा। किसानों ने फसल काटनी शुरू कर दी। ठिकाने वाले किसानों का कुछ नहीं कर पाये।

लागतें माफ

मेवाड़ का असर अब बाकी रियासतों पर भी पड़ना शुरू हो गया था। इससे अंग्रेजी सरकार भयभीत होने लगी। उसने ठिकानों पर दबाव डाला कि वह पंचायत से शीघ्र समझौता करे। अंग्रेजी एजेंट हलैंट स्वयं 4 फरवरी 1922 को बिजोलिया पहुंचा। इस बार किसानों का प्रतिनिधित्व

राजस्थान सेवा संघ ने किया। कई दिनों के बाद हलैट ने ठिकाने को समझौते के लिए तैयार किया। पैंतीस लागतें माफ कर दी गईं, ठिकाने के कर अधिकारी हटा दिए गए। किसानों पर जो मुकदमे चल रह थे वे भी वापिस ले लिए गए। जब्त की गई जमीनें किसानों को फिर से वापिस दे दी गईं। फसल की बजाय लगान नकदी में परिणत करने का वायदा किया गया। जनता में किसानों की यह बहुत बड़ी जीत मानी गई।

बेगू का आदिवासी आंदोलन

ठिकानों की बदनियत से समझौता अधिक समय तक टिकाऊ न रह पाया। इसी बीच बेगू किसान आंदोलन के दौरान पथिकजी गिरफ्तार कर लिए गए। अंग्रेज बहुत समय से इस समय की इंतजार में थे कि पथिकजी को कब कोई ठिकाना पकड़ पाता है।

बिजोलिया ठिकाने की तरह बेगू ठिकाने के किसानों ने भी लागतें देना बंद कर दिया था। यह ठिकाना भी मेवाड़ का ही था। यहां के किसान अधिकतर आदिवासी थे। पथिकजी के आह्वान पर बिना कूंते के ही अपनी फसल काटने लगे। ठिकाने तथा राजाओं के विरुद्ध सभी जनता इकट्ठी हो रही थी। भील, अन्य आदिवासी, शोषित तथा पीड़ित पथिकजी से इतने खुश थे कि जो भी पथिकजी एक बार कह देते उसकी खबर रातों-रात सभी गांवों में पहुंच जाती। ठिकाने वाले भाग खड़े हुए। राजा की पुलिस भी कुछ न कर पाई। अंग्रेज इतने भयभीत हुए कि पथिकजी को पकड़ने तथा किसान विद्रोह को दबाने के लिए उन्होंने सेना की टुकड़ी मिस्टर ट्रैंच के अधीन लाला अमृत लाल को उनके साथियों सहित बचाने के लिए गोविंदपुर गांव भेजी। लाला ठिकाने का नौकर था तथा लागतें वसूल करने गांव गया था। ट्रैंच रास्ते भर गांव वालों को पीटता आया तथा उन्हें पकड़-पकड़ कर बंदी बनाने लगा।

इसी बीच पथिकजी ने गांव वालों को संगठित किया तथा ट्रैंच से कहा कि किसानों को पीटना बंद करो। परंतु ट्रैंच सेना की शक्ति के नशे में चूर था। अतः उसने पथिकजी की बात नहीं मानी और गांव वालों ने भी सेना पर हमला बोल दिया। जहां सेना के कुछ सिपाही भी घायल हुए वहां कई गांव वाले गोलियों के शिकार बने।

पथिकजी का बयान

पथिकजी ने प्रेस को बयान दिया तथा अपने समाचार पत्र में आदिवासियों पर हुए गोली कांड का विवरण दिया। वह इस प्रकार था, "उदयपुर के हिन्दू राजा ने अंग्रेज मिस्टर ट्रैंच द्वारा बहू-बेटियों को नंगा करके उनकी इज्जत पर हाथ डलवाया, भालों से गौंदवाया, भोले-भाले किसानों तथा गांव वालों को गोली से भुनवाया, कितने ही किसानों को मौत के घाट उतरवाया तथा हजारों गोलियों से घायल हुए। पांच सौ से अधिक किसानों को बंदी बनाकर बेगू ठिकाने पर लाया गया।" इस सबको रास्ते-भर पीटा गया तथा अपमानित किया गया। आगे पथिकजी ने कहा कि "यदि ऐसा गोली-कांड इंग्लैण्ड में हो जाता तो मिस्टर ट्रैंच को भी तुरंत गोली मार दी जाती तथा उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया जाता।"

सेवा संघ के मना करने पर भी पथिकजी स्वयं बेगू गए तथा किसानों के संघर्ष का नेतृत्व करते रहे। अंग्रेज पथिकजी से बहुत परेशान थे तथा उनके संचालन को तोड़ना चाहते थे।

पथिकजी पर मुकदमा

कुछ समय के बाद पथिकजी को पकड़ लिया गया। पंडित त्रिभुवन नाथ की अध्यक्षता में विशेष अदालत का गठन करके उन पर राजद्रोह

का मुकदमा चलाया गया। पथिकजी उन दिनों संग्रहणी की बीमारी से वहुत पीड़ित थे पर राजा तथा सरकार उन्हें बराबर यातनाएं दे रही थीं।

पथिकजी की पैरवी करने के लिए रियासत के किसी व्यक्ति की भी हिम्मत नही हुई क्योंकि जो कुछ थोड़े-वहुत पढ़े-लिखे तथा जागरूक थे, वे सब राजा के गुलाम थे।

दूसरी ओर अंग्रेजों से तथा राजाओं से सीधी टक्कर कोई नही लेना चाहता था। पथिकजी को बाहर का वकील लेने की अनुमति नहीं थी। अतः इस मुकदमे में पथिकजी ने स्वयं अपनी पैरवी की। मुकदमा चार वर्ष तक चला तथा अदालत भी उदयपुर चली गई थी। इतना लम्बा समय लगने पर भी पथिकजी अपने मुख्य मुद्दे से न हटे और मुकदमे के साथ-साथ किसान आंदोलन का भी नेतृत्व बराबर करते रहे। नीचे कीं अदालत ने पथिकजी को पांच वर्ष की सजा दे दी। अतः पथिकजी साथ-साथ सजा भी काट रहे थे। सजा का समय भी पूरा होने वाला था कि विशेष अदालत ने मुकदमे से बरी कर दिया। उदयपुर में पथिकजी के स्वागत में वहुत वड़ा जुलूस निकाला गया। अब तो पथिकजी की प्रसिद्धि से राजा तथा अंग्रेज परेशान हो गए।

दूसरी ओर राजस्थान सेवा संघ को तोड़ने के लिए अंग्रेजी सरकार पूरी कोशिश कर रही थी। पथिकजी को अखबारों में 'नाजी' लिखवाया गया। कोर्ट ने पथिकजी के मेवाड़ में प्रवेश पर पावंदी लगा दी। पथिकजी के खिलाफ अखबारो में न जाने कितनी झूठी कहानियां छपवाई गईं। पथिकजी के प्रेस को नीलाम कर दिया गया तथा उन सभी अखबारों पर पावंदी लगा दी गई जो पथिकजी के बारे में सच्ची खबरें देते थे।

सिरोही का भील आन्दोलन

वेगू, बिजोलिया, भरतपुर, डूंगरपुर तथा अन्य भागो के किसान आंदोलनो के साथ सिरोही मे भील आंदोलन का नेतृत्व भी पथिकजी संघ के द्वारा करा रहे थे। उनके विश्वासपात्र सहयोगी सिरोही मे भील आदिवासियो को संगठित कर रहे थे। उधर अंग्रेज शासक राजाओ तथा उनके ठिकानों को भड़का रहे थे। सिरोही मे भी ऐसा ही हुआ। सिरोही का दीवान श्री मालवीय, पथिकजी से बहुत प्रभावित था। अतः उसने भीलो से समझौता करने की ठान रखी थी। ठिकाने को भी इसके लिए राजी कर लिया पर अंग्रेज अटेची इसके खिलाफ था तथा चाहता था कि हर हालत मे बढ़ी हुई लागते किसानो से वसूल की जाएं। वह वेगार प्रथा भी लागू रखना चाहता था।

पथिकजी सन् 1922 मे सिरोही पहुंचे। उस समय संघ के हजारो कार्यकर्त्ता वहां पहुंच चुके थे। पथिकजी का हजारो भीलो ने फौजी स्वागत किया। पथिककजी जहां-जहां भी गांव मे जाते वही तीर-कमानो से लैस भील लोग उनका प्रेमपूर्वक फौजी स्वागत करते। पथिकजी यह भली-भांति जानते थे कि अंग्रेजो की तोपों के सामने तीर-कमान कुछ नही कर सकते पर वह भीलो का सम्मान अंग्रेजो के हाथो लुटता भी नही देख सकते थे। पथिकजी नही चाहते थे कि भील सीधे अंग्रेजों से अस्त्र-शस्त्र की लड़ाई लड़ें। परंतु भीलों ने पथिकजी की बातो की अनदेखी शुरू कर दी। तब भी पथिकजी ने गांव-गांव घूमकर नौजवानों को समझाया कि आप लोगों के तीर-भाले अंग्रेजो की तोपो तथा वंदूकों का सामना करने मे सक्षम नही हैं। पर उन्हीं दिनो मेवाड़, ईडर, सिरोही तथा अन्य कई भागों में भीलो ने सशस्त्र विद्रोह कर दिया। नारा लगा "हौसल और हुकम नही" अर्थात् न तो लागत देंगे और न राजा तथा अंग्रेजो की सत्ता स्वीकार करेंगे। अंग्रेज तथा रियासतें इस सशस्त्र विद्रोह

से भयभीत हो गईं तथा सेना को विद्रोह दबाने का कार्य सौंपा गया। भीलों के इलाके में सेना भेजी गई। 1 मई, 1922 को भीलों तथा सेना में लड़ाई छिड़ गई। सेना ने गांव के गांव तोपों के गोलों से उड़ा दिए। भीलों ने भी सेना का बहुत नुकसान किया। गांव के गांव जलाकर सेना आगे बढ़ती रही। इसमें कितने ही भील मारे गए तथा हजारों जख्मी हुए। सेना के भी सैकड़ों सिपाही मारे गए। एक दो राजा, जो अब तक अंग्रेजो के साथ नहीं थे, वे भी उनके साथ हो गए।

पथिकजी ने संघ द्वारा पूरे सशस्त्र विद्रोह की जांच कराकर रपट अजमेर से छपने वाले सभी अखबारों में प्रकाशित करा दी। सिरोही की रपट देश के कोने-कोने में पहुंच गई। इस जघन्य अत्याचार से देश के अन्य भागों मे भी अव्यवस्था फैल गई। उधर गांधीजी ने यह सब देखते हुए असहयोग आन्दोलन वापिस ले लिया। भीलों को बहुत-सी रियायतें दी गईं। पथिकजी को भीलों ने अपना नेता ही नहीं माना बल्कि जगह-जगह हजारों की संख्या में आकर उनका प्रेमपूर्वक हार्दिक स्वागत भी किया।

पथिकजी ने बहन ऐनी हडसन द्वारा ब्रिटेन के हाउस आफ कामन्स में देशी राजाओं तथा सेना के खिलाफ प्रश्न उठवाया। भारतीय पीड़ितों की आह ब्रिटिश सांसदों तक पहुंचा दी गई। बहुत से सांसदों ने पथिकजी को जघन्य अपराध के खिलाफ लड़ने के लिए बधाई भेजी।

बूंदी का भील आन्दोलन

बूंदी के बरड़ ठिकाने में भीलों के ऊपर सेना ने गोली चला दी, जिससे कुछ आदमी मारे गए तथा अनेक पुरुष, स्त्रियां और बच्चे घायल हो गए। संघ ने इन्हें अजमेर के सरकारी अस्पताल में भर्ती करा दिया। इस घटना की खबर को पथिकजी ने अखबारों में प्रकाशन के लिए भेज

दिया। अंग्रेजो ने जनता के रोष को देखते हुए सेना को बूंदी से हटा लिया तथा बूंदी के राजा पर दबाव डाला कि वह भीलो से शीघ्र से शीघ्र समझौता करें। कुछ दिन के बाद राजा तथा ठिकाने ने भीलों तथा अन्य जनजाति के लोगों के साथ समझौवा कर लिया। लागतें तथा बेगार बंद कर दी गईं तथा बिजोलिया के किसानों वाला समझौता यहां पर लागू हो गया।

भरतपुर का किसान आंदोलन

सन् 1928 तक पथिकजी विभिन्न किसान आन्दोलनों का नेतृत्व करते रहे। इन सभी जगह किसानों ने रियासतों तथा अंग्रेजों के चंगुल से राहत प्राप्त की। भरतपुर के राजा ने ठिकानो, जागीरदारों तथा राजाओं को बुलाकर एक बैठक की तथा उसमें प्रस्ताव पास किया गया कि हम लोग सेवा संघ से बात करना चाहते हैं। पथिकजी की अध्यक्षता में 'राजस्थान सेवा संघ' के प्रतिनिधियों ने किसानों की ओर से ठिकानों, राजाओं तथा उनके कारकूनों से बात की। एक समझौता हुआ जो किसानों तथा ठिकानों के बीच था। उसमें तय हुआ कि अब बेगार प्रथा बिल्कुल बंद कर दी जाएगी, कूंते की आवश्यकता नही होगी। किसानों से लगान, लागत, मालगुजारी आबपासी के रूप में वर्ष में दो बार नकदी ली जाएगी। यदि वर्षा नही होती तो लगान नही लिया जाएगा। प्राकृतिक विपदा होने पर ठिकानों की ओर से आयोग बिठाए जाएंगे। किसानों और उनके संगठनों को मौका दिया जाएगा कि वे अपनी कठिनाइयों को आयोग के सामने रखें। किसान तथा ठिकाने की इस संधि का नाम 'पथिक किसान संधि' रखा गया। अब तो पूरे राजस्थान में ही नहीं बल्कि देश के बहुत बड़े भाग में पथिकजी की वाह-वाह होने लगी। बाद में आबू में भी एक 'किसान संधि' हुई जिसे पथिकजी ने पूरे राजस्थान हेतु लागू कराया।

पथिकजी का अधिक जीवन संघर्ष में कटा। उन्होंने हजारो कर्मठ कार्यकर्ता तथा नेता ऐसी जमीन पर पैदा किए जहां मानव जानवर जैसा जीवन पैदा व्यतीत करता था तथा हर समय बेगार तथा दया का जीवन जीता था। वह न तो इच्छानुसार खा सकता था और पहन सकता था। यहां तक कि वह पक्का मकान भी अपनी इच्छानुसार नही बना सकता था। औरतें तथा मर्द राजाओं की बख्शीश पर निर्भर रहते थे।

देशी राज्य परिषद

कांग्रेस पार्टी के आह्वान पर तथा देशी राजाओं की मजबूरी के कारण सन् 1928 मे बंबई में अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद की बैठक हुई। पथिकजी भी सेवा संघ के कुछ साथियों सहित इसमें भाग लेने वहां पहुंचे। पहले से वहां देश-भर के राजा तथा किसानों के संगठन पहुंच चुके थे। परिषद की बैठक में उपाध्यक्ष का चुनाव होना था जो किसानों में से चुना जाना था। अतः किसानों ने एक स्वर में पथिकजी के नाम का अनुमोदन कर दिया। उपाध्यक्ष के नाते बंबई में जो पथिकजी का स्वागत हुआ उसकी धाक न केवल भारतवर्ष में दिखाई दी बल्कि इंग्लैण्ड के अखवारो ने भी पथिकजी के फोटो सहित इसकी खबर छापी तथा लिखा कि देशी राजाओं पर जहां यह किसानों की जीत है वहीं यह पथिकजी के अथक परिश्रम का फल भी है क्योंकि उत्तरी भारत में उन्होंने सबसे पहले किसानों का आंदोलन चलाया तथा जेलें काटीं और कांग्रेस पार्टी की सहायता से किसानों की कठिनाइयों को शासकों के सामने रखा।

अपना प्रेस लगाया

बंबई से लौटने पर पथिकजी ने अजमेर मे अपना एक प्रेस लगाया और 'साप्ताहिक राजस्थान संदेश' नामक समाचार-पत्र निकालना शुरू

किया जिसका संपादन वह स्वयं करने लगे। शीघ्र ही यह समाचार पत्र किसानों, शोषितों तथा क्रांतिकारियों का मुख्य स्वर बन गया।

मजदूर संघ

'राजस्थान संदेश' अखबार के बाद पथिकजी ने सन् 1929 के शुरू मे 'मजदूर संघ' की नीव डाली क्योंकि मजदूर सब जगह शोषण का शिकार बना हुआ था। राजस्थान में जगह-जगह 'मजदूर संघ' की शाखाएं खोली गई और मजदूरों के शोषण के खिलाफ आए दिन प्रदर्शन होने लगे। मालिकों की नींद हराम होने लगी। मालिक-मजदूरो के विवादों के अधिकतर फैसले पथिकजी की अध्यक्षता में ही होते थे। अजमेर तो मजदूर संघ का गढ़ बन गया।

पूण स्वतंत्रता

इसी बीच 1929 में राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी का अखिल भारतीय सम्मेलन लाहौर में हुआ तथा वहां कंग्रेस पार्टी ने भी पूर्ण स्वतंत्रता की घोषणा कर दी।

26 जनवरी 1930 को समस्त देश में स्वतंत्रता की शपथ ली गई। पथिकजी तो एक लेखक के साथ-साथ कवि भी थे। उन्होंने राजस्थान में शपथ के साथ एक नारा और जोड़ दिया 'प्राण भले ही गवाना पड़े पर न झंडा भारत मां का नीचे झुकने देना।"

विधवा विवाह का प्रारम्भ

पथिकजी ने देखा कि राजस्थान में सती प्रथा जोरों पर थी पर विधवा विवाह विशेषकर राजपूतों में बिल्कुल नही था। अंतर्जातीय शादी का तो नाम तक न था। पथिकजी ने इन सब सामाजिक बुराइयों को दूर

करने के लिए अभियान छेड़ा। कई विधवाओं की शादी करवाई गई तथा कुछ अंतर्जातीय शादियों की बातों को आगे बढ़ाया गया। इसी बीच कुछ राजपूत तथा ब्राह्मण विधवाओं ने पथिकजी को ललकारा और कहा कि कहना बहुत आसान है पर विधवा स्त्री को ब्राह्मण समाज में अपनाना बहुत कठिन है। पथिकजी की उम्र भी पचास वर्ष से अधिक थी पर मन ही मन वह ठान बैठे थे कि अगर शादी करनी ही है तो किसी विधवा से ही करनी है। इसी बीच छोटी कक्षाओं को पढ़ाने वाली एक राजपूत विधवा महिला ने पथिकजी से संपर्क किया कि यदि विधवा विवाह शुरू करना चाहते हो तो मैं इस काम के लिए स्वयं को प्रस्तुत करती हूं। पथिकजी ने बहुत यत्न किया पर कोई सजातीय आदमी उस महिला से विवाह करने के लिए आगे नही आया। अध्यापिका जानकी देवी ने पथिकजी के मार्ग में एक सामाजिक चुनौती खड़ी कर दी थी। एक दिन स्वयं पथिकजी ने साथियों से कहा कि इस सामाजिक गतिरोध को खत्म किया जाना चाहिए। पथिकजी ने इधर-उधर देखा तथा साथियों से पूछा कि क्या किया जाए। सब चुप थे। इसी बीच एक बूढ़े साथी ने कहा "क्यों नही बेटा पथिक, स्वयं इस चट्टान को काट कर एक तरफ फेंक देते।" सब जानते थे कि पथिकजी जानकी देवी से बीस वर्ष बड़े हैं पर जानकी देवी ने कहा कि मैं इसके लिए तैयार हूँ। जानकी देवी जी बालकपन में ही विधवा हो गई थीं। पथिकजी ने भी अपनी सहमति प्रदान कर दी। अतः 24 फरवरी, 1930 को पथिकजी की जानकी देवी से कोर्ट में शादी हो गई।

किसान आंदोलन के लिए जमीन खरीदी

पथिकजी एक दूरदृष्टा और महान-क्रांतिकारी थे, उन्होंने चहुंमुखी कार्य किए। वह गदर पार्टी के सशस्त्र क्रांतिकारी से लेकर एक अनुभवी पत्रकार, लेखक, कवि, उपन्यासकार, अहिंसावादी देशभक्तों के अगुवा,

किसानों के मसीहा, सामाजिक सुधारों को लागू करने वाले, दलितों तथा स्त्रियों के उत्थान के समर्थक और एक महान राष्ट्रवादी नेता थे। इन सब कार्यों को चलाने के लिए उन्होंने सन् 1945 में गांव सूबासड़ा, जिला मदासौर, मध्य प्रदेश में लगभग सत्तर एकड़ भूमि खरीदी। यहां पर वह उपरोक्त कार्यों के केन्द्र बनाना चाहते थे। वहीं पर वह, 'राजस्थान खेतरी', 'नवीन राजस्थान' और 'तरुण राजस्थान' आदि समाचारपत्रों के लिए प्रेस भी लगाना चाहते थे। पर हुआ इस सबका उल्टा। उनकी जमीन पर कुछ लोगों ने नाजायज कब्जा कर लिया। मध्य प्रदेश सरकार ने इसे बढ़ावा दिया तथा उस जमीन पर पथिकजी के नाम की तख्ती तक न लग सकी।

आगरा से 'नव संदेश'

किसानों तथा शोषितों के जागरण हेतु चौथी बार पथिकजी ने एक नया समाचारपत्र 'नव-संदेश' आगरा (उत्तर प्रदेश) से निकाला तथा स्वयं इसका संपादन कार्य संभाला। यह समाचारपत्र भी सन् 1942 में जब्त कर लिया गया।

पथिकजी का विवाह 24 फरवरी 1930 को सम्पन्न हुआ था। उस समय पथिकजी अजमेर में एक छोटे से मकान में रहते थे। तभी सन् 1930 का गांधीजी का नमक आंदोलन शुरू हो गया। देशभक्तों की धर-पकड़ शुरू हो गई। 24 मार्च 1930 को पथिकजी पर अशांति फैलाने का आरोप लगाकर उन्हें जेल में बंद कर दिया गया। पथिकजी की पत्नी जानकी देवी के हाथों की मेहंदी अभी तक सूखी भी नहीं थी कि उनके पति पथिकजी जेल के सीखचों में बंद कर दिए गए। यह भी पता नहीं था कि जेल में कब तक रहेंगे। सन् 1931 के अंत तक पथिकजी जेल में रहे।

श्रीमती जानकी देवी पथिक का किराये वाला मकान, प्रेस तथा अखबार और सभी अन्य सामग्री पुलिस ने जब्त कर ली थी। इस समय श्रीमती पथिक बिल्कुल बेसहारा हो गईं। पथिकजी के नाम से रजवाड़े पुलिस तथा अंग्रेज इतने भयभीत थे कि वे किसी को यह साहस नहीं करने देते थे कि वह पथिकजी की पत्नी की सहायता करे। अतः जानकी देवी जी को राजस्थान छोड़ना पड़ा तथा वह मथुरा आ गईं। मथुरा में छोटा-सा किराये का मकान बड़ी कठिनाई से मिल पाया। मथुरा में जानकी देवी ने एक स्कूल मे सोलह रुपए महीने की नौकरी कर ली। एक छोटा-सा कच्चा मकान बनाया तथा उस पर एक छप्पर डाल लिया।

पथिकजी जेल से 1932 में वापिस आ गए तथा आगरा जाकर 'नव-संदेश' नाम का हिन्दी समाचार पत्र निकालने लगे। श्रीमती पथिक भी आगरा आ गईं तथा एक स्कूल में 18 रुपये महीने पर नौकरी करने लगी। पथिकजी अब पारिवारिक जीवन शांतिमय ढंग से जीना चाहते थे। भगतसिंह जी तथा अन्य क्रांतिकारियों को फांसी के बाद अब देश में क्रांति की कोई आशा नहीं रह गयी थी। लेकिन उन्हें शांति से रहने न दिया गया। दूसरे युद्ध के समय पथिकजी को दोबारा अशांति फैलाने के आरोप लगाकर नजरबंद कर दिया गया।

सन् 1942 के 'करो या मरो' आंदोलन के समय पथिकजी को फिर जेल में बंद कर दिया गया। समाचार पत्र तथा प्रेस को जब्त कर लिया गया। श्रीमती पथिक वापिस मथुरा आ गईं तथा आर्य समाज स्कूल में बीस रुपये महीने पर नौकरी करने लगीं।

उदयपुर जेल तथा पथिकजी का अन्य क्रांतिकारियों से संबंध

सन् 1926 में अंग्रेजों ने महाराणा फतेहसिंह को हटाकर अपने

सहयोगी भूपसिंह को महाराजा उदयपुर बना दिया। भूपसिंह गोरों का गुलाम था तथा उनकी सारी बातें मानता था। पथिकजी उस समय उदयपुर की जेल में पांच वर्ष की सजा काट रहे थे। जेलर वाजपेयी थे। जेलर का दामाद अवध विहारी वाजपेयी (फैजाबाद) कालेज में पढ़ता था। वह पथिकजी से जेल में मिलता रहता था। पथिकजी वाजपेयी के हाथों जेल से बाहर भगतसिंह जी आदि को पत्र भिजवा देते थे तथा पढ़ने-लिखने की किताबें भी इसी स्रोत से जेल के अंदर मंगा लेते थे। कालेज के एक प्राध्यापक श्री सक्सेना पथिकजी के सम्पर्क में आए। सक्सेनाजी ने पथिकजी पर एक बहुत अच्छी किताब भी लिखी है। सक्सेनाजी की पथिकजी से आखिरी मुलाकात कोटा में ऋषिदत्त मेहता के निवास पर 6 फरवरी 1954 को हुई। मेहताजी राजस्थान पत्र के सम्पादक थे। सक्सेनाजी लिखते हैं :

"पथिकजी उसी क्रांतिकारी अंदाज में बातें कर रहे थे जैसे सन् 1926 में जेल यातनाओं के समय करते थे, क्योंकि मेरी पहली मुलाकात पथिकजी से उदयपुर जेल में हुई थी। पर अब उनकी उम्र वेशभूषा देखकर मन को बहुत पीड़ा तथा ग्लानि हुई। पथिकजी के सभी कपड़े फटे हुए थे, मैले थे, जूती टूटी हुई थी। दाढ़ी बढ़ी हुई थी। मेरे बार-बार आंसू टपक रहे थे। यह सोचकर कि जिसके सेवक आज राज्य के मुख्य मंत्री हों, मंत्री हों, साथी देश की बागडोर के मालिक हों और पथिकजी उसी देश तथा राज्य में ऐसी हालत में हों। कुल मिलाकर मेरी आंखें उनका यह ढंग देखने में असमर्थ थी पर उनकी बातों तथा आवाज में कोई अंतर नहीं आया था और न वह यह महसूस कर रहे थे कि आज उनकी उम्र 80 वर्ष है। और उनकी यह हालत शोचनीय है। बस मन को एक ही बात करौंद रही थी कि पथिक द्वारा सन् 1921 में

गाईं गईं लाइने ठीक थी। "शहीदो की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले, वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।"

"न भूल जाना खुशी के दिन तुम परस्तो के वे फिसानो कि जिनके बदले हुए मुय्यसर है पेजेशन महफिलें और तराने। लेटो पलंग पर तब याद करना इन नौजवानो की जांबाजी जिन्होंने फांसी के तख्तों पर ही थे नींद लेने को पैरताने।"

पथिकजी तथा शोभा लाल गुप्ता : गुप्ता जी दैनिक हिन्दुस्तान, दिल्ली समाचार पत्र के सह-संपादक रहे हैं तथा लेखक भी हैं। उन्होने पथिकजी के बारे में लिखा है :

"आज राजस्थान की नीति और सार्वजनिक जीवन में अनेकों झूठे-सच्चे हीरे चमक रहे हैं किन्तु कौन है, जो त्याग, वीरता, कष्ट सहने, कर्मण्यता और राष्ट्रीयता में पथिकजी की बराबरी कर सके? नव राजस्थान के निर्माण में अपनी हड्डी पसली गला देने वाले इस शहीद की स्मृति में मेरा सिर हमेशा इसकी (पथिकजी की) याद आने पर श्रद्धा से नत हो जाता है। काश! हम मृत्यु के उपरान्त भी उनके प्रति न्याय कर सकते और आबू किसान संधि तथा उन द्वारा लिखे अन्य दस्तावेजों को छपवा पाते।"

पथिकजी तथा गणेश लाल व्यास, पत्रकार, अजमेर : व्यास जी पथिकजी के अच्छे अनुयायियों में से थे। व्यास जी कहते हैं कि "जैसी मेरी आदत है सिर झुकाए हुए मैं एक दिन अजमेर (राजस्थान) शहर के वाजार से जा रहा था कि पीछे से पथिकजी ने पुकारा "गणेश......"। वह आवाज राजस्थान के कर्मठ मार्गदर्शक नेता पथिकजी की थी जिसको 10 मिनट सुनकर बुरे कुकर्मी व्यक्ति भी देश भक्त बन जाते थे। मैं देख न सका और न अपने में विश्वास जगा सका कि देश की आजादी के वाद राजस्थान को वनाने वाले की यह हालत हो सकती है। पथिकजी

एक चबूतरे के पास एक फटे, मैले कुर्ते, मामूली-सी व फटी हुई मोटी खादी की धोती और पांच आने वाले रबड़ के चप्पल, हाथ में झोला लिए हुए दीन-हीन वेश में खड़े हुए थे। पर वृद्ध वीर पथिक की वही शेरवाली आवाज तथा वही ज्योति वाली निगाहें थीं।

"आप जानते हैं, वह पथिक कौन थे? अरे भाई वही पथिकजी थे जो गदर पार्टी में अगुवा रहे, प्रेस के मालिक थे, छः अखबारों के सम्पादक थे। बिजोलिया, वेगू, सिरोही, भरतपुर, उदयपुर तथा पूरे देश के किसान आन्दोलन के मार्गदर्शक, नेता व अगुवा थे। राजस्थान कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष थे, गांधीजी के सबसे प्रिय साथियों में से थे। खुदीराम बोस, रासबिहारी बोस, सरदार भगतसिंह, चन्द्र शेखर आदि के साथी, अनेक पुस्तकों के लेखक, कवि, साहित्यकार आदि थे। राजस्थान के पहले मुख्य मंत्रियों के गुरु थे, अजमेर शहर में राजस्थान सेवा संघ के केसरगंज केन्द्र के संस्थापक थे। जिनके नाम से अंग्रेज तथा राजा इतने भयभीत रहते थे कि सेना के संरक्षण में ही कार्य कर सकते थे। यदि पथिकजी का कोई भी शिष्य बिना पुलिस के बताये एक राज्य से दूसरे राज्य में जाता था तो पुलिस अशांति का बिगुल बजा देती थी तथा पुलिस की एक पूरी टुकड़ी उनके साथ रहती थी। परन्तु आज फटे हाल में वही पथिकजी तो खड़े थे। इस हालत में थे। मैंने झुककर पथिकजी को प्रणाम किया। मेरे दोनों हाथों को पकड़कर छाती से लगाते हुए बोले—अरे बाबू गणेश तेरे कपड़े उजले हैं । भरपेट मिल रही है क्या? मेरी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। मैं दादा.........आगे कुछ नही कह पाया। मेरी जबान रुक गई परन्तु वह शेर हंसता रहा तथा मेरे सिर पर हाथ रखकर बोला—"गणेश! फटे कपड़े, भूख तथा यातनाएं तो जनसेवकों के संग रहती हैं।" पथिकजी की गरीबी की हालत ऐसी थी कि वह धर्मशालाओं में ही अधिक ठहरते थे। लिखने पढ़ने के लिए हर वक्त झोले में किताब तथा कागज रखते थे।"

गांधी जी का पथिकजी के बारे में सी.एफ. एन्ड्रयूज जी को पत्र :

गांधी जी ने फरवरी, 1921 में एन्ड्रयूजजी को कलकत्ता से लिखा था कि मैं तुम्हें विजयसिह पथिक के बारे में बतलाता हूं कि पथिक कर्मठ कार्यकर्त्ता है जबकि दूसरे बातें बनाने वाले हैं। पथिक एक बहादुर सिपाही, साहसी तथा कभी न थकने वाला और सुख की चैन से गुलाम देश मे न बैठने वाला है परन्तु जिद्दी है। पथिक, महादेव देसाई का बिजोलिया किसान आन्दोलन में मार्गदर्शन करने वाला है। उसकी सबसे बड़ी विशेष बात तो यह है कि बिजोलियावासियो का पूरा विश्वास पथिक पर है तथा वह असहयोग आंदोलन का चमकता सितारा राजस्थान मे है जिससे हजारों असहयोगी साथी तथा अनुयायी उससे वहां प्रेरणा पा रहे हैं।" उस समय गांधी जी कलकत्ता मे सी.आर.आर. दास साहब के यहां ठहरे हुए थे (20 फरवरी 1921)।

पथिकजी का स्वर्गवास अजमेर में 28 फरवरी, 1954 को लू लगने से हो गया ।

पथिकजी का शताब्दी वर्ष :

केन्द्रीय सरकार तथा राज्य सरकारों ने 1982 में पथिकजी का जन्म शताब्दी वर्ष बहुत उत्साह से मनाया । हर वर्ष 28 मई को उनकी पुण्य तिथि पर उन्हें श्रद्धांजलियां अर्पित की जाती हैं। आज भी राजस्थान में पथिकजी की याद में अनेक गीत गाए जाते हैं।

धन्य धन्य पथिक महाराज,
राजस्थान जगाने आए
कभी था यह वीरों का स्थान,
आज मिला है धूल में इसका मान
कृषक जो अति दुर्बल, दीन
हो चुके मनुष्यत्व से हीन
प्रथम ले बिजोलिया को
साथ बढ़ाया जग में अपना हाथ
कराया फिर आजादी का साथ
चारों दिशा में तेरी धाक।